भारत की सांस्कृतिक धरोहर

- झलकियाँ अंतरिक्ष से

श्वेता शर्मा,
श्वेता मिश्रा,
अजय

भारत सरकार
अन्तरिक्ष विभाग
अन्तरिक्ष उपयोग केन्द्र
आंबावाडी विस्तार डाक घर,
अहमदाबाद-380015. (भारत)
दूरभाष: +91-79-6912000, 6915000
फैक्स :

Government of India
Department of Space
SPACE APPLICATIONS CENTRE
Ambawadi Vistar P.O.
Ahmedabad-380 015. (India)
Telephone : +91-79-6912000, 6915000
Fax :

आ.सी. किरण कुमार
निदेशक

प्रस्तावना

सांस्कृतिक विरासत का अभिप्राय अतीत की धरोहरों से है जो हमें पिछली पीढ़ी से मिली है तथा भावी पीढ़ी को सौंपनी होती है । हमारे देश की सांस्कृतिक विरासत असाधारण, समृद्ध एवं विविध है जो बेमिसाल इमारतों, पुरातत्त्व स्थलों और राष्ट्रीय महत्ता के प्रागैतिहासिक काल के खंडहरों के रूप में परिलक्षित है । निःसंदेह भारत की यह विरासत राष्ट्रीय गौरव का स्रोत है तथा इन्हें हमें भावी पीढ़ी के लिए संजो कर रखने की आवश्यकता है । इन धरोहरों के अध्ययन से हमें अपने देश की प्राचीन सभ्यता, संस्कृति एवं वास्तुकला के बारे में विस्तृत जानकारी मिलती है । आज आवश्यकता है कि हमारे युवा विद्यार्थी एवं नागरिक देश की प्राचीन संस्कृति के बारे में जानें व वर्तमान काल के परिपेक्ष्य में इनके महत्त्व को समझें ।

उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए इस पुस्तक में भारतीय सुदूर संवेदन उपग्रह (आईआरएस) द्वारा लिए गए चित्रों के माध्यम से देश की कुछ सांस्कृतिक धरोहरों को अंकित करने व उन स्थलों के बारे में सामान्य जानकारी प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है ।

मैं आशा करता हूँ कि अंतरिक्ष उपयोग केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिकों डॉ. अजय, श्वेता शर्मा एवं श्वेता मिश्रा द्वारा संकलित यह पुस्तक हमारे छात्रों एवं युवा नागरिकों को देश की सांस्कृतिक महत्ता समझने के लिए प्रेरित करेगी । साथ ही साथ यह पुस्तक भारतीय सुदूर संवेदन उपग्रह द्वारा लिए गए चित्रों के उपयोग की महत्ता समझने में भी सहायक होगी ।

आ सी किरण कुमार

अहमदाबाद — आ.सी. किरण कुमार
मार्च 30, 2013

विषय-वस्तु

क्रं.स.		पृष्ठ सं.
1.	किला	3
1.1	आगरा	5
1.2	पालघाट	6
1.3	भरतपुर	8
1.4	आमेर	10
1.5	रणथम्भोर	12
1.6	बिदर	14
1.7	चित्तौड़गढ़	16
1.8	बेल्लारी	18
1.9	झाँसी	20
1.10	गुलबर्गा	22
1.11	गोलकोण्डा	24
1.12	फतेपुर सीकरी	26
1.13	असीरगढ़	28
1.14	गूटी	30
1.15	वारंगल	32
1.16	देवनहल्ली	34
1.17	माडिकेरी	36
1.18	सिद्धवत्तम	38
1.19	तुगलकाबाद	40
1.20	डीग	42
1.21	प्रतापगढ़	44
1.22	कित्तूर	46
1.23	जिंजी	48
1.24	गंडिकोंडा	50
1.25	दौलताबाद	52

2.	इन्डो-इस्लामिक स्थल	55
2.1	ताजमहल	56
2.2	बीबी का मकबरा	58
2.3	कुतुब मीनार	60
2.4	पुराना किला	62
2.5	गोल गुम्बद	64
3.	महल	67
3.1	जोधपुर	68
3.2	मैसूर	70
4.	बौद्ध धार्मिक स्थल	73
4.1	सांची	74
4.2	सारनाथ	76
4.3	लोरिया नदंनगढ़	78
4.4	विक्रमशिला	80
4.5	नागार्जुनकोंडा	82
4.6	बोधगया	84
4.7	नालन्दा	86
5.	हड़प्पा सभ्यता स्थल	89
5.1	कालीबंगा	90
5.2	धोलीवीरा	92
6.	यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल	95
6.1	जंतर-मंतर	96
6.2	चंपानेर -पावागढ़ पुरातत्व उद्यान	98
6.3	भीमवेटका शैलाशर्य	100

6.4	गोवा के चर्च तथा मठ	102
6.5	एलीफेंटा गुफाएं	104
6.6	कोर्णाक सूर्य मंदिर	106
6.7	एलोरा गुफाएं	108
6.8	अजन्ता की गुफाएं	110
7.	मंदिर	113
7.1	काँचीपुरम	114
7.2	मदुरई	116
7.3	भुवनेश्वर	118
7.4	खजुराहो	120
7.5	हलेबीडु	122
7.6	मार्तंड	124
7.7	श्रीरंगम	126
7.8	हम्पी	128
7.9	गिरनार	130
7.10	अवंतिपुर	132
7.11	दारासुरम	134
7.12	त्रिवेन्द्रम	136
7.13	सोमनाथपुर	138
7.14	कुंभकोणम	140
8.	जैन धार्मिक स्थल	143
8.1	श्रवण बेलगोला	144

किला

आगरा का किला

आगरा का किला, उत्तरप्रदेश राज्य के आगरा शहर में यमुना नदी के दाहिने तट पर स्थित है। यह मुगलों के द्वारा बनवाए गए कई गढ़ों में से एक है। इसका निर्माण तीसरे मुगल सम्राट अकबर ने करवाया था। यह स्थल पुराने समय में बादलगढ़ के रूप में जाना जाता था। इसी के अवशेषों पर आगरा के किले का निर्माण हुआ। इस किले को भव्य एवं सुसज्जित इमारतों और मुगल शैली में संवारा गया था। इतिहास दर्शाता है कि सिकंदर लोदी (1487-1517) दिल्ली का पहला सुल्तान था जिसने अपनी राजधानी दिल्ली से आगरा बदली।

सिकंदर लोदी के मरने के बाद उसके बेटे इब्राहीम लोदी ने नौ साल तक किले को अपने अधीन रखा। किन्तु 1526 ई. में पानीपत की लड़ाई में वह हार गया और मारा गया। लोदी काल में कई महल, मस्जिद और किले बनवाए गए। अकबर जब 1558 ई. में आगरा पहुंचे तब उन्होंने महल को अच्छी अवस्था में लाने का आदेश दिया और इस तरह महल का कार्य आठ साल में पूरा हुआ। इस तरह कई मुगल शासक इस किले में रहे उनमें शाहजहाँ और औरंगजेब भी शामिल हैं। आज भी यह किला अपने गौरवपूर्ण एवं भव्य इतिहास के लिए प्रसिद्ध है एवं यूनेस्को घोषित विश्व धरोहर स्थल है। आगरा का किला भारत के सबसे महत्वपूर्ण किलों में से एक है।

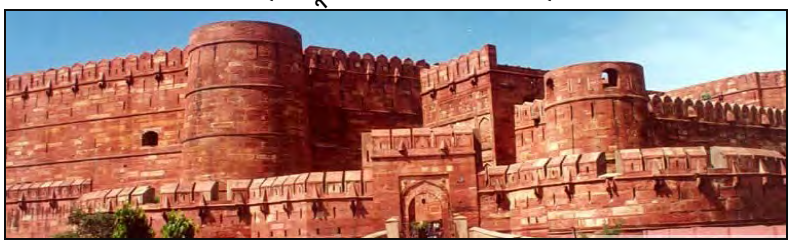

आगरा का किला (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

टीपू सुल्तान का किला (पालघाट)

पलक्कड़ जिसे पुराने समय में पालघाट के नाम से जाना जाता था, केरल राज्य में स्थित एक बड़ा शहर है। यह अपने पालघाट के किले के लिए प्रसिद्ध है। यह किला पलक्कड़ के किले और टीपू के किले के नाम से भी जाना जाता है। यह किला 18वीं शताब्दी में मैसूर के सुलतान हैदर अली द्वारा बनवाया गया था। आज यह भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के तहत संरक्षित स्मारक है। इस किले के अन्दर कई स्मारक हैं जो सैलानियों को भारी संख्या में आकर्षित करते हैं जैसे किले के अंदर निर्मित भगवान हनुमान का मंदिर। पलक्कड़ की उप जेल भी किले के भीतर स्थित है।

इस किले और पलक्कड़ टाउन हॉल के बीच एक मैदान है जिसे कोटा मैदानक भी कहा जाता है। एक समय इस जगह ने हैदर अली के पुत्र टीपू सुल्तान की सेना के हाथी और घोड़ों के लिए अस्तबल का काम किया था। पालघाट अथवा पलक्कड़ का यह किला आज भी अपने गौरवपूर्ण इतिहास को दर्शाता है।

पालघाट का किला (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

भरतपुर का किला

लोहारगढ़ का किला राजस्थान के भरतपुर शहर में स्थित है। भरतपुर के जाट शासकों द्वारा इसका निर्माण किया गया था। महाराजा सूरजमल ने अपनी शक्ति और धन का प्रयोग अच्छे कार्यों के लिए किया तथा अपने राज्य में अनेक किले तथा महलों का निर्माण करवाया। भरतपुर का किला (लोहारगढ़ किला) उनमें से एक है तथा भारत के इतिहास में इससे मजबूत किला और कोई नहीं है। इस किले में दो फाटक हैं। एक उत्तर में अष्ट धातु द्वार के रूप में जाना जाता है जबकि दक्षिण वाले द्वार को चारभुजा कहा जाता है।

महाराजा सूरजमल ने भरतपुर शहर, रुस्तम के पुत्र 'खेमकरन सोगरिया' से सन् 1733 में जीता था तथा 1753 में भरतपुर कस्बे को स्थापित किया। उन्होंने शहर के चारों ओर मजबूत दीवारों का निर्माण करवाकर शहर की घेराबन्दी करवा दी। वह 1753 में भरतपुर में निवास करने लगे। सन् 1805 में 'लार्ड लेक' के नेतृत्व में अंग्रेजी सेनाओं के हमले का इस दुर्गम किले ने सामना किया तथा छह सप्ताह की घेराबंदी के बाद भी अंग्रेज इस किले के अन्दर जाने में सफल नहीं हो पाए और उन्हें भरतपुर के शासक से समझौता करना पड़ा। किले के महत्वपूर्ण स्मारकों में से किशोरी महल, महल खास और कोठी खास हैं।

मोती महल तथा जवाहर बुर्ज और फतेह बुर्ज जैसे टॉवर मुगलों और अंग्रेजी सेनाओं के ऊपर विजय की स्मृति में लगाये गये। गेटवे पर विशाल हाथियों के चित्र हैं।

भरतपुर का किला (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

आमेर का किला

आमेर उपनगर जयपुर से लगभग 11 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। आमेर कछवाहा शासकों का प्राचीन गढ़ था। आमेर अपने मंदिरों और किले के लिए प्रसिद्ध है। सन् 1592 में राजा मानसिंह ने इसका निर्माण शुरू करवाया और राजा जयसिंह ने इसका निर्माण पूरा करवाया। यह किला लाल बालू के पत्थरों और सफेद संगमरमर से बनाया गया था। इस किले की नक्काशी अत्यंत आकर्षक है। आमेर का किला अपने शीश महल के लिए बेहद प्रसिद्ध है। आमेर किला अपनी उत्कृष्ट नक्काशी और कलात्मक चित्रकारी के कारण आकर्षण का केंद्र बना हुआ है।

यहाँ की भीतरी दीवारें, गुंबद और छतों पर शीशे के टुकड़े ऐसे जड़े हुए हैं कि केवल कुछ मोमबत्तियों को जलाते ही शीशों का प्रतिबिंब पूरे कमरे को प्रकाश से जगमग कर देता है। किले के बाहर झील बाग की खूबसूरती देखते ही बनती है।

आमेर का किला (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

रणथम्भोर का किला

रणथम्भोर दुर्ग दिल्ली-मुम्बई रेल मार्ग के सवाई माधोपुर रेलवे स्टेशन से 13 कि.मी. दूर रन और थंभ नाम की पहाड़ियों के बीच समुद्रतल से 481 मीटर ऊँचाई पर तथा 12 कि.मी. की परिधि में बना है। किले के तीनों ओर पहाड़ों में कुदरती खाई बनी है जो इस किले की सुरक्षा को मजबूत कर अजेय बनाती है। यह उत्तरी भारत के सबसे मजबूत किलों में से एक था। किले के अन्दर कई सारी इमारतें थीं जिनमें से केवल कुछ ही युद्ध और समय के प्रकोपों से बच पाई हैं। शेष बचे खंडहरों में, दो मंडप, बादल महल और हमीर अदालत तथा शाही महल के कुछ हिस्से हैं जो पुरानी भव्यता का विचार प्रदान करते हैं।

किले के अन्दर गणेश जी का एक पुराना मंदिर भी है जो तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को आकर्षित करता है। यह किला 944 ई. में बनाया गया। सोलहवीं शताब्दी में यह ऐतिहासिक इमारत मुगलों के अधिकार में आ गई। 17वीं शताब्दी में मुगलों ने यह किला जयपुर के राजा को उपहार में दे दिया। पृथ्वीराज चौहान के पौत्र गोविन्दा ने दिल्ली के सुलतान की जागीरदारी के रूप में रणथम्भोर में खुद को स्थापित किया। दिल्ली और रणथम्भोर के संबंधों में बदलाव तब आया जब इल्तुतमिश ने छल से रणथम्भोर के शासक वीरनारायन की हत्या कर दी और रणथम्भोर पर कब्जा कर लिया।

परन्तु वीरनारायन के चाचा ने मालवा भागकर, रणथम्भोर की सीमा से सटे एक छोटे राज्य की स्थापना की और अंततः उन्होंने रणथम्भोर पर हमला करके विजय प्राप्त की।

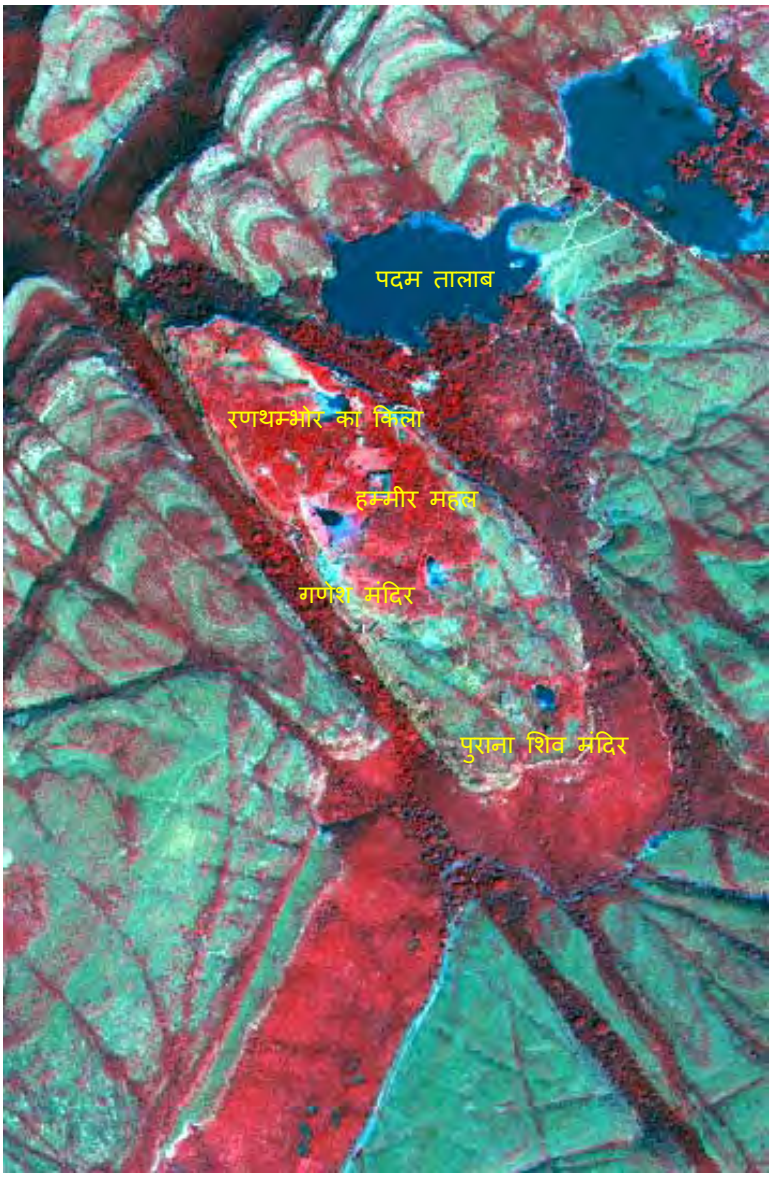

रणथम्भोर का किला (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

बिदर का किला

बिदर का किला, कर्नाटक राज्य के बिदर जिले के 'बगीचों के शहर' बेंगलोर में स्थित है। यह 15वीं सदी का किला है। बिदर का किला तत्कालीन कर्नाटक शासकों के सुंदरतम कृतियों में से है। कर्नाटक के बिदर का भव्य किला लाल पत्थरों से बना है। बिदर के किले के अन्दर स्थित रंगीन महल अपनी सौंदर्य शैली और अनुपम नक्काशियों के लिए प्रसिद्ध है।

इसका उपयोग पूजा स्थल के रूप में भी होता था। यह महल किले के मुख्य आकर्षणों में से एक है और आकर्षक लकड़ी के साजो-सामान की प्रचुरता के लिए प्रसिद्ध है। इस किले में सात द्वार हैं। मुख्य द्वार फारसी वास्तु शैली को प्रदर्शित करता है। गुम्बद दरवाजा फारसी शैली में निर्मित है जो मेहराब की आकृति प्रदर्शित करता है। बिदर के किले का शेर दरवाजा, जो कि द्वितीय प्रवेश द्वार है, दो चीतों की छवि को प्रदर्शित करता है जो इसके मुखाकृति पर नक्काशी के द्वारा बनाया गया है। अन्य द्वारों में से दक्षिण में फतह द्वार (अष्टभुजीय मीनार और पुल), पूर्व में

टालघाट द्वार, दिल्ली द्वार तथा मडु द्वार हैं। प्रवेश द्वार के मुख्य गढ़ को मुंड बुर्ज के नाम से जाना जाता है जहाँ पर बन्दूकें स्थित हैं।

बिदर का किला (रिसौर्ससेट लिस-४)

चित्तौड़गढ़ का किला

चित्तौड़गढ़ किला राजस्थान में स्थित है। चित्तौड़ के अदम्य गौरव का प्रतीक चित्तौड़गढ़ का यह किला 7वीं शताब्दी में मौर्य शासकों द्वारा निर्मित प्रवेश-द्वार के साथ एक विशाल संरचना है। यह किला 180 मीटर ऊँची पहाड़ी पर 700 एकड़ के विशाल क्षेत्र में फैला हुआ है। यह किला कई राजवंशों के शासन का गवाह रहा है जैसे मौर्य (सातवीं-आठवी ई.), परमार (दसवीं-ग्यारहवी ई.) गहलोत (बारहवी ई.) और सिसोदिया राजवंश। यह उत्कृष्ट किला राजपूत संस्कृति और मूल्यों का चित्रण करता है। चित्तौड़गढ़ किले में ऐसे कई स्मारक हैं जो राजपूत वास्तुकला का उदाहरण हैं। किले में सात द्वार हैं -पडल पोल, भैरव पोल, हनुमान पोल, गणेश पोल , जोरला पोल, लक्ष्मण पोल और अंत में राम पोल।

इस किले के अंदर कई महल हैं जैसे कुंभा महल। इस महल का नाम महाराणा कुंभा के नाम पर रखा गया। किले के अंदर पद्मिनी महल है जिसे राणा रतन सिंह ने अपनी रानी पद्मिनी के नाम पर रखा था। इसके अलावा किले में रतन सिंह महल और फतेह प्रकाश महल भी हैं। किले के अंदर कालिका माता मंदिर एवं कुंभस्वामी मंदिर भी हैं। कालिका माता मंदिर का निर्माण आठवीं सदी में राजा मनभंगा ने करवाया था। कुंभस्वामी मंदिर का निर्माण भी आठवीं सदी में हुआ था। किले के अंदर दो शानदार स्तंभ हैं- कीर्तिस्तंभ और जैन कीर्ति स्तंभ। कीर्तिस्तंभ को विजयस्तंभ भी कहा जाता है। इसे महाराणा कुंभा ने 1448 ई. में बनवाया था, यह स्तंभ भगवान विष्णु को समर्पित है।

जैन कीर्ति स्तंभ की ऊँचाई 24.50 मीटर है और यह स्तंभ पहले जैन तीर्थंकर आदिनाथ को समर्पित है।

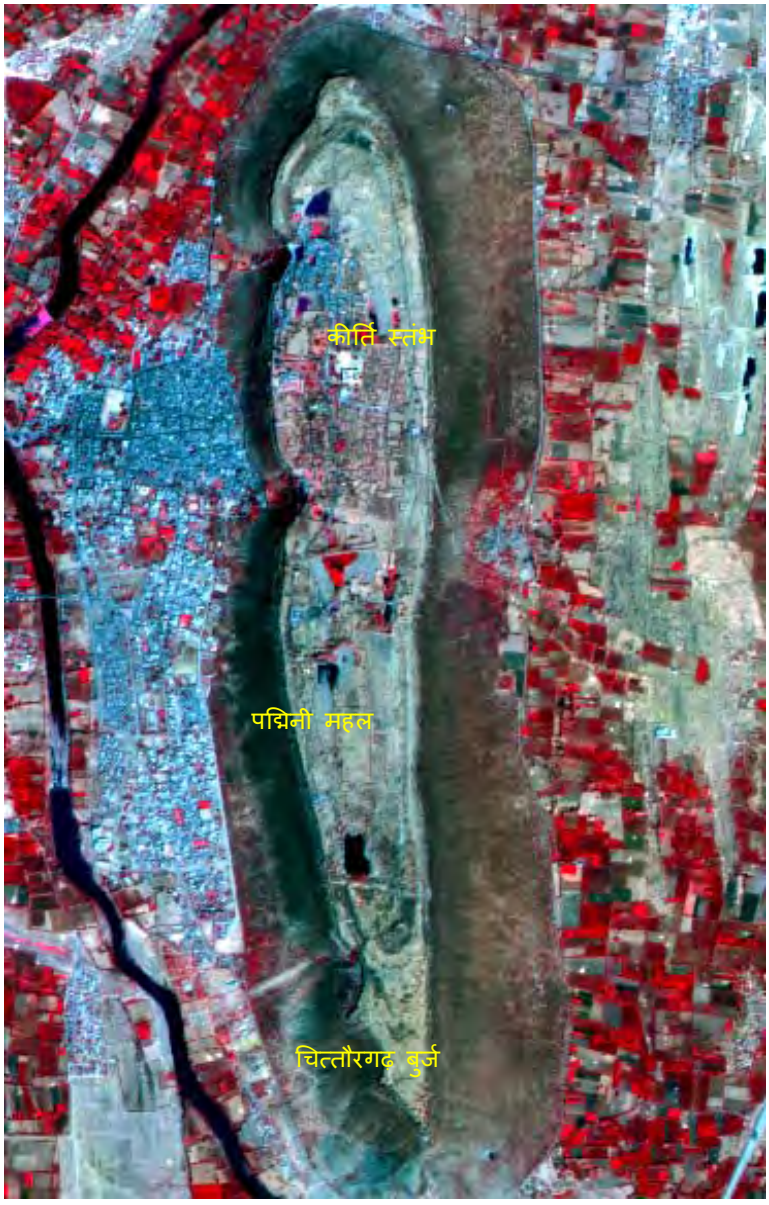

चित्तौरगढ़ का किला (रिसौर्ससेट लिस-४)

बेल्लारी का किला

बेल्लारी किला कर्नाटक राज्य के बेल्लारी जिले में स्थित है। यह किला बल्लरी गुड्डा नाम की पहाड़ी पर स्थित है। इसका निर्माण दो भागों में हुआ था। ऊपरी किला विजयनगर साम्राज्य के सामन्ती, हनुमप्पा नायक द्वारा बनवाया गया लेकिन निचले किले का निर्माण हैदर अली ने 18वीं सदी में करवाया था। निचले किले का वास्तुकार एवं बनाने वाला एक फ्रांसीसी इंजीनियर था। उसने ऊपरी किले का पुन: निर्माण भी किया था। किले में ऐसे कई ऐतिहासिक और धार्मिक स्मारक हैं जो उसके समृद्ध इतिहास का प्रचार करते हैं।

कई प्राचीन टैकों के साथ ऊपरी किले में एक गढ़ था जबकि निचले किले में शस्त्रागार था। ऐसा कहा जाता है कि जब किला बनने के बाद हैदर अली को यह पता चला कि बनाए गए किले, विपरीत पहाड़ी 'कुंबारा गुड्डा' से कम ऊंचाई पर थे तो वह बेहद नाराज़ हुआ। यह युद्ध रणनीति के नजरिये से नुकसानदायक था। नतीजन हैदर अली ने फ्रांसीसी इंजीनियर को फाँसी का आदेश दे दिया। ऐसा कहा जाता है कि उस इंजीनियर की कब्र पूर्वी गेट पर स्थित है। स्थानीय मुसलमानों का मानना है कि संभवतः यह कब्र किसी मुस्लिम संत की है और इसलिए उसे संरक्षित किया गया है।

बेल्लारी का किला (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

झाँसी का किला

झाँसी का किला उत्तर प्रदेश राज्य के झाँसी शहर में स्थित है। इसका निर्माण ओरछा के राजा बीर सिंह देऊ ने 1613 में करवाया था। यह किला बलवन्तनगर कस्बे में 'बांगड़ा' नामक चट्टानी पहाड़ी पर स्थित है। बलवन्तनगर को ही वर्तमान में झाँसी के नाम से जाना जाता है। लखनऊ से 292 किमी तथा दिल्ली से लगभग 415 कि.मी. की दूरी पर स्थित झाँसी, बुन्देलखंड के लिये प्रवेश द्वार है। यह शहर रानी लक्ष्मीबाई की वीरता के कारण अधिक लोकप्रिय है। रानी लक्ष्मीबाई एक वीरांगना थीं जिन्होंने 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों के खिलाफ बहुत बहादुरी से लड़ाई लड़ी थी। रानी लक्ष्मीबाई को 'झांसी की रानी' के नाम से जाना जाता है। वह पूर्व स्वतन्त्र भारत की महान राष्ट्रवादी नायिका थीं।

अंग्रेजों द्वारा झाँसी के किले पर अधिकार करने के प्रयासों के विरोध में रानी ने वीरतापूर्वक उनका सामना किया तथा अपने बेटे को अपने वस्त्रों से कस कर बाँध कर, दोनों हाथों से तलवार का उपयोग कर और घोड़े की लगाम को मुँह में थाम कर उन्होंने अंग्रेजों की सेना से युद्ध किया। चट्टानी पहाड़ी पर खड़े हुए किले को देखकर यह पता चलता है कि किस तरह उत्तर भारत की किला निर्माण की शैली दक्षिण भारत की शैली से भिन्न थी। किले में प्रवेश के 10 द्वार हैं। इनमें से कुछ खंडेराव द्वार, दतिया दरवाजा, उन्नाव द्वार, झरना दरवाजा, लक्ष्मी दरवाजा, सागर दरवाजा, ओरछा द्वार, सेन्यर द्वार तथा चंद दरवाजा है।

किले के उल्लेखनीय स्थानों में से शिव मंदिर तथा गणेश मंदिर हैं जो प्रवेश द्वार पर स्थित हैं। इसके अतिरिक्त 'कड़क बिजली तोप' है जो 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों के खिलाफ प्रयोग की गई

थी।

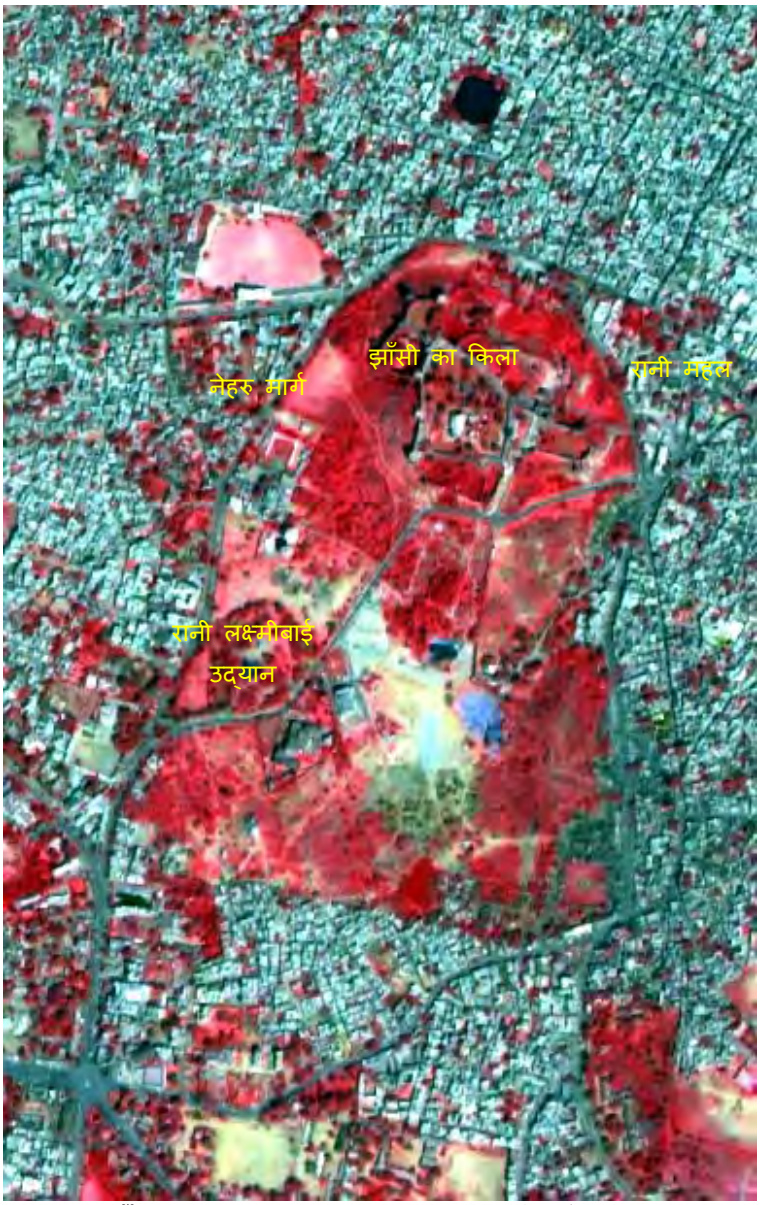

झाँसी का किला (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

गुलबर्गा का किला

गुलबर्गा का किला, कर्नाटक राज्य के जिले गुलबर्गा में स्थित है। इस किले का निर्माण 1347 ई. में अल-उद-दीन बहमनी राजवंश द्वारा करवाया गया था। किले के अंदर कई इस्लामी स्मारक जैसे मस्जिद, महल, मकबरे बाद में बनवाए गए। 1367 में किले के अंदर जामी मस्जिद का निर्माण करवाया गया। यह अद्वितीय संरचना फारसी स्थापत्य शैली के साथ धनुषाकार एवं सुंदर गुबंद के साथ निर्मित है जो भारत की अन्य मस्जिदों से अलग है। गुलबर्गा नगर 1427ई. तक बहमनी राज्य की राजधानी रहा। बाद में राजधानी को बिदर स्थानांतरित कर दिया गया। इसका कारण वहाँ की बेहतर जलवायु परिस्थितियाँ थीं।

गुलबर्गा के किले में फारसी वास्तुकला एवं शैली का प्रभाव देखा जा सकता है। एक अलग भारतीय-फारसी स्थापत्य शैली बहमनी राजवंश की स्थापना के बाद अस्तित्व में आई और इस शैली का प्रभाव उस समय निर्मित इमारतों में देखा जा सकता है। किले में कई और दर्शनीय स्मारक हैं जैसे सूफी संत सैयद मोहम्मद का मकबरा। इस मकबरे की दीवारों पर सुंदर चित्रकारी है जिसमें तुर्की और ईरानी शैली का प्रभाव देखा जा सकता है। मुगलों ने इस मकबरे के पास एक मस्जिद का निर्माण करवाया था।

गुलबर्गा का किला (कार्टो-१)

गोलकोण्डा

गोलकोण्डा हैदराबाद शहर के पश्चिम में लगभग 11 कि.मी. दूरी पर स्थित एक प्रसिद्ध किला है और हैदराबाद पर्यटन का प्रमुख आकर्षण माना जाता है। यह किला मूलत: वारंगल के काकतीय राजवंश द्वारा बनवाया गया था। 1363 ई. में यह किला बहमनी राजाओं के हाथों में चला गया और 1518 ई. में उनके पतन के बाद यह कुतुब शाही राजाओं (1518-1687ई.) की राजधानी बन गया। कुतुब शाही राजाओं ने किले को बढ़ाया और विशाल दुर्ग दीवारों के साथ इसे और मजबूत बनवाया।

इसके बाद 1687 ई. में मुगल बादशाह औरंगजेब ने, कुतुबशाही वंश के अंतिम शासक अबुल हसन तानाशाह से छीनकर किला अपने कब्जे में कर लिया और आसफ जाह को डेक्कन प्रांत के सूबेदार के रूप में नियुक्त किया। 1713 ई. में आसफ जाह ने निज़ाम-उल-मुल्क के रूप में स्वतंत्रता की घोषणा की और 1948 ई. तक हैदराबाद में शासन किया। गोलकुंडा या गोलकोण्डा का किला डेक्कन पठार का सबसे प्रसिद्ध और बड़ा किला है। यह किला 400 फीट ऊँची पहाड़ी पर बनाया गया था। इस किले की एक विशेषता यह है कि इसके प्रवेश द्वार पर खड़े होकर यदि ताली बजाई जाए, तो उसकी आवाज को किले के सबसे ऊपरी भाग में यानि इकसठ मीटर की ऊँचाई पर भी सुना जा सकता है।

गोलकोण्डा की एक और उल्लेखनीय विशेषता यहाँ कि जल आपूर्ति प्रणाली है। किले की महत्वपूर्ण संरचनाओं में नगीना बाग, गार्ड लाईन, तीन मंजिला शस्त्रागार इमारत, दरबार हॉल, तारामती मस्जिद और अंबर खाना शामिल हैं।

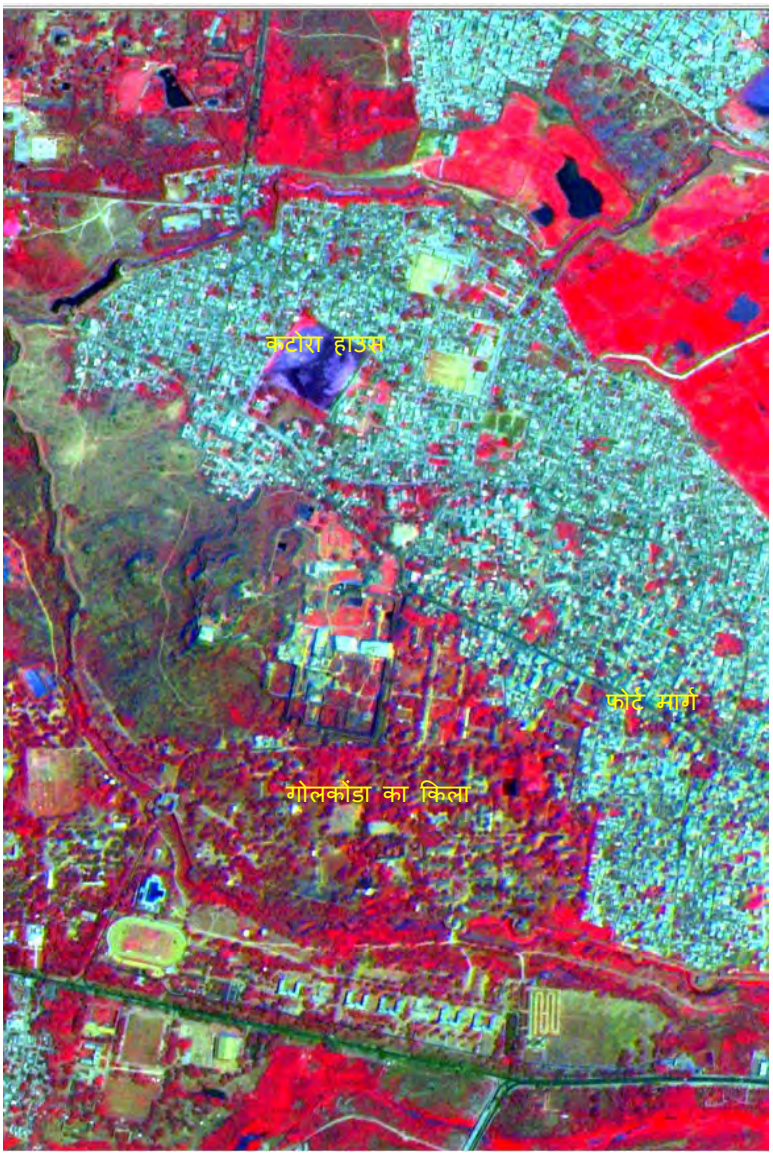

गोलकोंडा का किला (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित

फतेहपुर सीकरी

विश्वविख्यात बुलंद दरवाजे और शेख सलीम चिश्ती की दरगाह के लिए मशहूर फतेहपुरी सीकरी आगरा शहर से लगभग 37 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। कहा जाता है कि यहां आकर सम्राट अकबर ने संत शेख सलीम चिस्ती के सम्मुख, पुत्र प्राप्ति की मन्नत मांगी थी और शहजादे सलीम (जहांगीर) के जन्म (1569 ई.) के अवसर पर फतेहपुर सीकरी की नींव रखी थी। 1571 ई. में संत से भेंट के अवसर पर सम्राट ने अपने सामंतों को उनके निजी उपयोग के लिए भवन बनाने का आदेश दिया। एक ही वर्ष में फतेहपुर सीकरी का सुंदर आयोजित नगर तैयार हो गया।

इस दरगाह की दीवारों पर भव्य पच्चीकारी तथा जालियां विशेष रूप से दर्शनीय हैं। कई अन्य दर्शनीय स्मारकों में दीवाने खास, बुलंद दरवाजा, नौबत खाना, दीवाने आम, जामा मस्जिद, जोधाबाई महल आदि शामिल हैं। विश्व प्रसिद्ध बुलंद दरवाजे का निर्माण, अकबर ने गुजरात विजय के पश्चात् 1575 ई. में करवाया था। यह दरवाजा अपने उत्कृष्ट शिल्प एवं ऊंचाई के लिए प्रसिद्ध है। दीवाने खास में अकबर अपने प्रमुख सलाहकार और मंत्रियों से परामर्श करता था और दीवाने आम में अकबर आम नागरिकों से मिलता तथा उनकी शिकायतों को सुनता था। नौबतखाने में हिंदू तथा मुस्लिम स्थापत्य कला का सुंदर सम्मिश्रण देखा जा सकता है। इसके अलावा यहाँ जोधाबाई महल है जिसका निर्माण अकबर ने 1570 से 1574 ई. के बीच अपनी रानी जोधाबाई के लिए करवाया था।

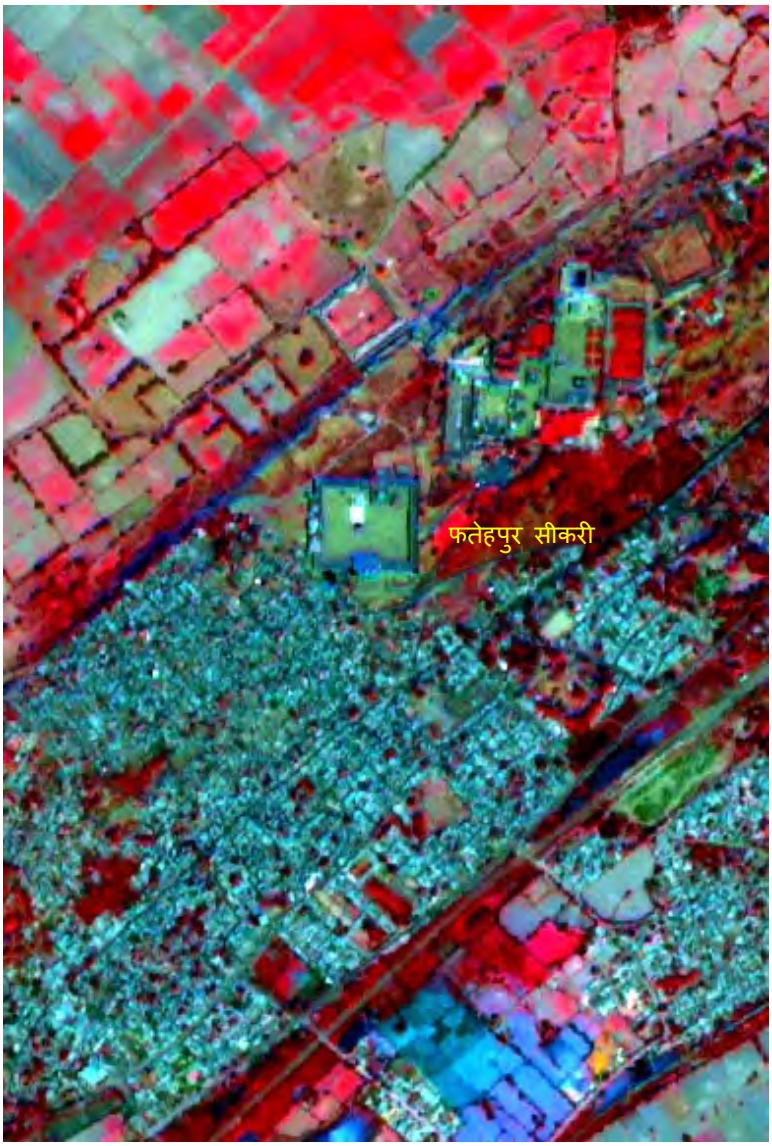

फतेहपुर सीकरी (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

असीरगढ़ का किला

असीरगढ़ का किला मध्यप्रदेश राज्य में, बुरहानपुर शहर के 20 किमी उत्तर में स्थित है। इतिहास में इस किले को अभेद्य माना जाता था और इस किले पर विजय का मतलब डेक्कन पर नियंत्रण होना था। इसलिए असीरगढ़ को डेक्कन की कुंजी भी माना जाता था। यह किला अहीर राजा असा अहीर द्वारा बनवाया गया था। इस किले का असली नाम असा अहीर गढ़ था किंतु इसके नाम को सरल बनाने के लिए मध्य के अक्षरों को हटाकर इसका नाम असीरगढ़ रख दिया गया। असीरगढ़ किला पहले फारूकी वंश के शासकों के कब्जे में था और फिर बाद में मुगलों के कब्जे में आया। किले के तीन भाग हैं- असीरगढ़, कमरगढ़ एवं मलयगढ़। किले के महत्वपूर्ण स्मारकों में जामा मस्जिद और हिंदू मंदिर शामिल हैं।

1536 ई. में जब मुगल सम्राट हुमायूँ गुजरात को जीतने के बाद बड़ौदा-भरूच-सूरत के रास्ते बुरहानपुर पहुंचे, उस समय वहां राजा अली खान का राज्य था। राजा अली खान को आदिल शाह के नाम से भी जाना जाता था। आदिल खान के ही शासन में बुरहानपुर में बहुत-सी महत्वपूर्ण इमारतों का निर्माण हुआ जैसे जामा मस्जिद, ईदगाह, जैनाबाद मस्जिद और असीरगढ़ किले का ऊपरी भाग। हिंदुओं के द्वारा बनवाए गए इस किले पर मुगल, होलकर और अंग्रेजों ने राज्य किया। इस किले की वास्तुकला, मुगल स्थापत्य कला इस्लामी, फारसी और भारतीय वास्तुकला का मिश्रण है।

यहाँ कुछ मकबरे और मीनारें हैं जो मध्ययुगीन भारतीय वास्तुकला को दर्शाते हैं।

असीरगढ़ का किला (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

गूटी का किला

गूटी करनूल-बंगलौर राजमार्ग पर अनंतपुर शहर से 52 कि.मी. की दूरी पर है। यह कस्बा भारत के राज्य आंध्र-प्रदेश में स्थित है। पुराने दिनों में गूटी गौतमपुरी के नाम से जाना जाता था। गूटी का क्षेत्र पहले सम्राट अशोक के शासन के अधीन था। बाद की सदियों में यह कृष्णदेवराय के विजयनगर साम्राज्य के शासन के अधीन रहा था। गंडीकोटा के पेम्मासानी नायकों ने विजयनगर राजाओं के रूप में गूटी का नियंत्रण किया। बाद में यह मैसूर राज्य के हैदरअली और टीपू सूल्तान के नियंत्रण में आ गया। गूटी किला, गूटी के मैदानी इलाकों के ऊपर लगभग 300 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।

यह आंध्र-प्रदेश में सबसे पुराने पहाड़ी किलों में से एक है। यह किला विजयनगर साम्राज्य के सम्राटों द्वारा बनवाया गया था। मुरारी राव की अगुवाई में मराठों ने इस पर विजय प्राप्त की। इसके बाद 1773 ई. में हैदर अली द्वारा इस पर विजय प्राप्त की गई। अंतत: 1799 ई. में टीपू सुल्तान की हार के बाद यह अंग्रेजों के हाथों में चला गया। यह किला एक खोल के आकार में बनवाया गया है। इसमें 15 मुख्य द्वारों के साथ 15 किले हैं। यहाँ पर एक छोटा मंडप है जो चूना-पत्थर से बना है, इसे मुरारी राव की गद्दी के नाम से जाना जाता है। यह मंडप एक चट्टान के किनारे पर है जहाँ से आस-पास का मनोरम दृश्य देखा जा सकता है। इस किले की अनूठी विशेषता यह है कि इतनी ऊँचाई पर भी जल संसाधन की उपलब्धता है।

इस किले में कई मंदिर हैं जैसे नागेश्वरस्वामी मंदिर, लक्ष्मीनरसिंहस्वामी मंदिर तथा रामास्वामी मंदिर।

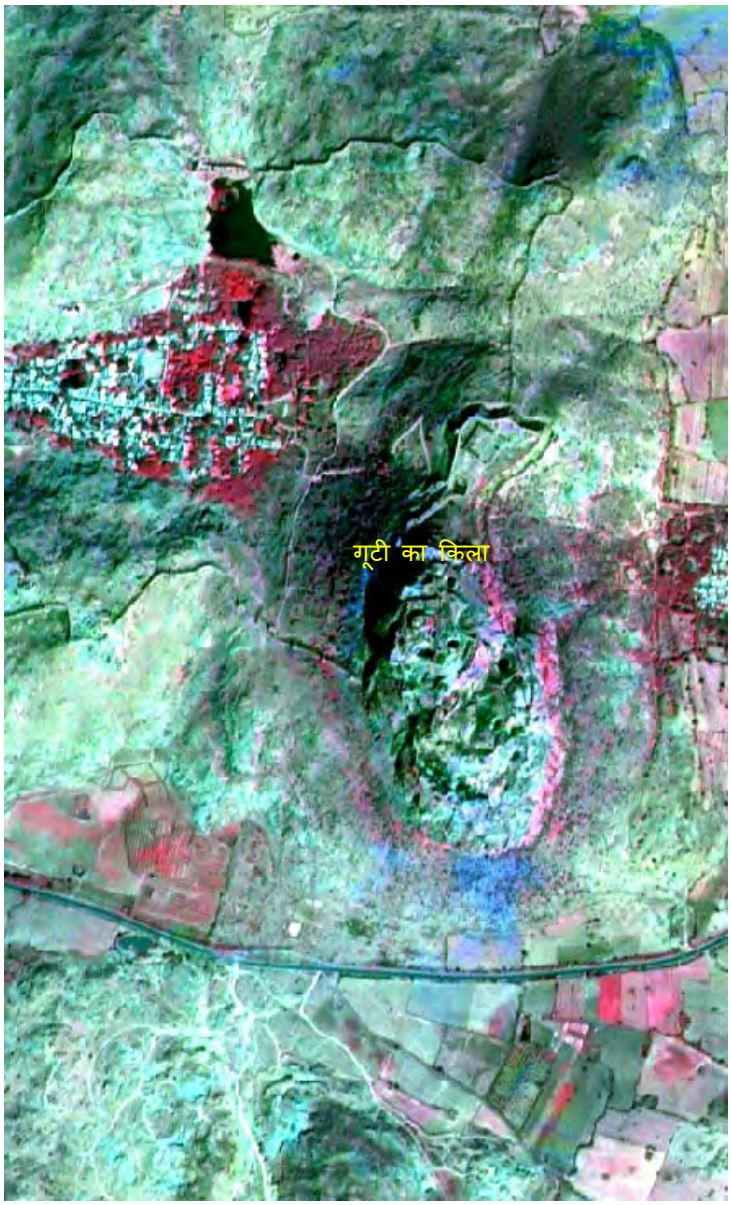

गूटी का किला (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

वारंगल का किला

वारंगल का किला, आंध्रप्रदेश में स्थित है। यह वारंगल रेलवे स्टेशन से लगभग 2 किमी की दूरी पर है। वारंगल 12वीं शताब्दी में काकतियों की राजधानी बना। इसमें तीन संकेन्द्रित किलेबन्दियां हैं जिनमें सबसे भीतर के पत्थर की किलेबंदी चारों दिशाओं से 45 बुर्जों और प्रवेश द्वारों से युक्त है जो मध्यकालीन सुरक्षा वास्तुकला का प्रतीक है। वारंगल के किले का निर्माण काकतिय राजा गनपति देव के आदेश पर प्रारम्भ हुआ जिसे उनकी पुत्री रानी रुद्रमा देवी की देखरेख में पूरा किया गया।

चार ऊँचे तोरणों से घिरे स्वयंभू मन्दिर परिसर के अवशेष काकतिया कला का उत्कृष्ट उदाहरण है। वर्तमान शहर के दक्षिण पूर्व में स्थित वारंगल का किला कभी दो दीवारों से घिरा हुआ था। जिनमें भीतरी दीवार के पत्थर के द्वार तथा बाहरी दीवार के अवशेष मौजूद हैं। 1000 स्तम्भों वाला प्रसिद्ध मंदिर शहर के भीतर ही स्थित है। प्रसिद्ध पत्थर के द्वार (कीर्ति तोरण) यहाँ स्थित हैं। ये लगभग 30 फुट ऊँचे और अभी भी खड़े हुए हैं। यह उत्कृष्ट कृति एक ही चट्टान से खुदी हुई है। वर्तमान में इस किले के अवशेष मात्र ही बचे हैं।

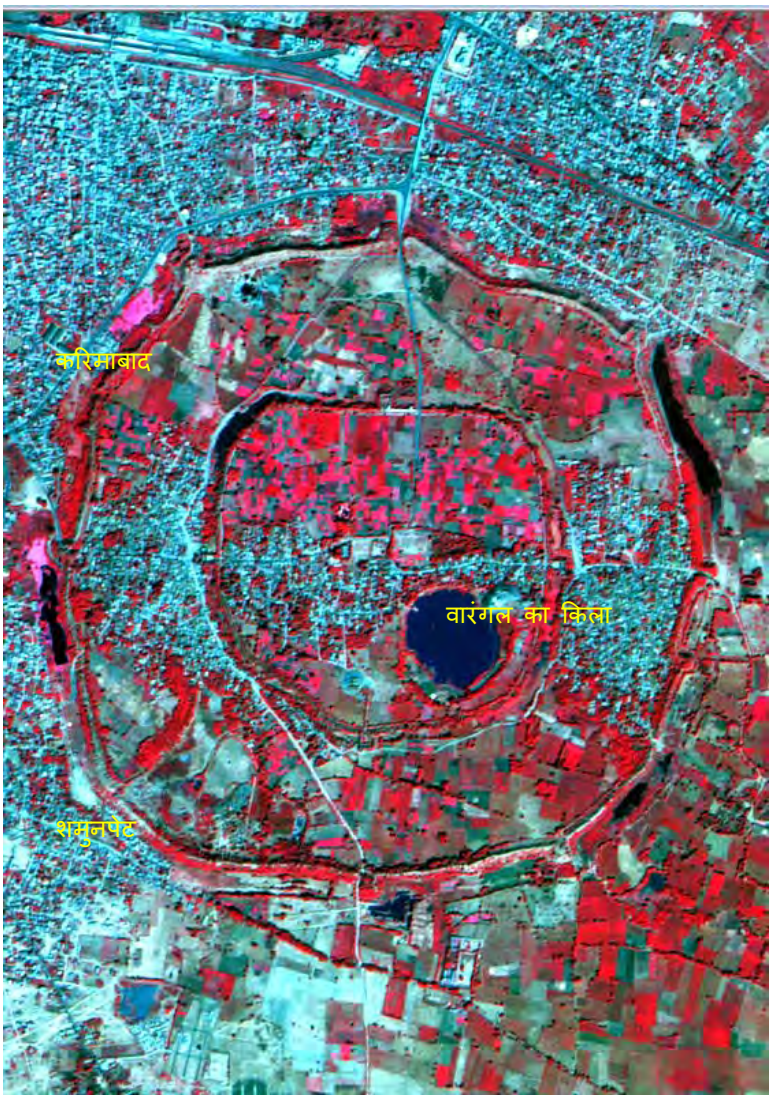

वारंगल का किला (रिसौर्ससेट लिस-४)

देवनहल्ली का किला

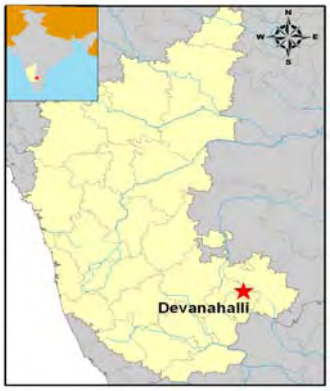

देवनहल्ली किला कर्नाटक राज्य के सबसे पुराने किले में से एक है। यह किला बैंगलौर शहर के 34 किमी उत्तर में देवनहल्ली नगर में स्थित है। मैसूर के शेर के रूप में विख्यात टीपू सुल्तान का जन्म स्थल इस किले के पास स्थित है। भारत के पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग ने इस किले और टीपू सुल्तान के जन्मस्थान को संरक्षित स्मारक घोषित किया है। इस किले का निर्माण 1501 ई. में करवाया गया। बाद में यह हैदर अली और फिर टीपू सुल्तान के हाथों में चला गया।

ऐसा कहा जाता है कि 1791 ई. में लॉर्ड कार्नवालिस ने इस किले की घेराबंदी की और एंगलो-मैसूर युद्ध के दौरान किले को घेर लिया। किले के अंदर कई पुराने मंदिर हैं उनमें सबसे पुराना मंदिर वेणुगोपालास्वामी है। द्रविड शैली और विजयनगर शैली की मूर्तियां और पत्थर की नक्काशियाँ यहाँ के मंदिरों की खासियत है। यह विशाल किला 20 एकड़ के इलाके में फैला हुआ है।

आज तक वह घर इस किले में स्थित है जहाँ टीपू सुल्तान और हैदर अली रहा करते थे। इस तरह देवनहल्ली किला आज भी अपने इतिहास को संजोए हुए है।

देवनहल्ली का किला (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

मडिकेरी का किला

मडिकेरी का किला 17 वीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में मुद्दूराजा द्वारा बनवाया गया था। उन्होंने इस किले के अंदर एक महल का भी निर्माण करवाया था। अंततः यह टीपू सुल्तान के द्वारा ग्रेनाइट से बनाया गया तथा उन्होंने इस का नाम "जाफराबाद" रखा। 1790 में दोद्वावीरा राजेन्द्र ने इस किले पर नियंत्रण कर लिया। लिंगराजेन्द्र वोडयार-द्वितीय ने 1812-1814 ई. में महल का पुनर्निर्माण करवाया। प्रवेश द्वार के उत्तर- पूर्व के कोने में दो विशालकाय चिनाई हाथी और दक्षिण पूर्व कोने में एक गिरजाघर है। मडिकेरी किला परिसर के अंदर मडिकेरी के डिप्टी कमिश्नर का कार्यालय है।

परिसर के गिरजाघर की इमारत में एक संग्रहालय है जिसमें इतिहास से जुड़ी हुई कई वस्तुएं हैं - मुख्य रूप से अंग्रेजों के शासन के युग से तथा इसमें कोडगु के विशाल व्यक्तित्व वाले फील्ड मार्शल के.एम.करियप्पा का भव्य चित्र भी है। यह गिरजाघर गॉथिक शैली में निर्मित है और इसे सेंट मार्क चर्च के नाम से जाना जाता है।

यह पुरातत्त्व विभाग द्वारा संग्रहालय में परिवर्तित कर दिया गया। संग्रहालय के अतिरिक्त इस किले में एक जिला जेल, कोटे महागणपति मंदिर और महात्मा गाँधी सार्वजनिक पुस्तकालय भी है।

मडिकेरी का किला (कार्टो-१)

सिद्धावत्तम का किला

सिद्धावत्तम का किला आंध्र प्रदेश के कडप्पा जिले में स्थित है। यह 1303ई. में बनवाया गया। यह किला पेन्नार नदी के तट पर लगभग 30 एकड़ के क्षेत्र में फैला हुआ है। किले के शीर्ष की सजावट गजलक्ष्मी की नक्काशियों से की गई है। इसके अतिरिक्त 17 वर्गाकार गढ़ जो कभी इस क्षेत्र की रक्षा के लिए उपयोग किए जाते थे, अभी भी किले में दिखाई देते हैं। इस किले में एक सहायक मार्ग है, जो मुख्य द्वार के बंद होने के बाद भी आंगतुकों को किले में जाने देता है। यह दक्षिण काशी के प्रवेश द्वार के रूप में जाना जाता है। किले के अंदर स्वामी मंदिर, सिद्धेश्वर मंदिर, दुर्गा मंदिर तथा बाला ब्रहमा मंदिर हैं।

इस किले का अधिक विकास, राजा कृष्णदेवराय के दामाद वर्धाराजू के शासनकाल में हुआ। मटली राजुलु के शासनकाल में यह किला सिर्फ मिट्टी का किला था। उसके बाद में यह वर्धा राजू के अधीन आ गया। इसके पहले यह उदयगिरी साम्राज्य का हिस्सा था। मट्टी अनन्त राजू ने इसे चट्टानी किले के रूप में पुनर्निर्मित किया। बाद में औरंगजेब के कमान्डर मीर जुमला ने इस पर कब्जा कर लिया। 1714 ई. में कडप्पा के शासक अब्दुल नबी खान ने इस पर विजय प्राप्त की।

यह क्षेत्र कुछ समय के लिए मयाना शासकों द्वारा भी शासित किया गया। अंततः 1799 ई. में सिद्धावत्तम ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथों में चला गया।

सिद्दावत्तम का किला (कार्टो-१)

तुगलकाबाद का किला

गयासुद्दीन तुगलक ने किलेबंदी वाले तुगलकाबाद नगर का निर्माण करवाया था जो दिल्ली का तीसरा नगर था। प्रकृति की गोद में निर्जन पहाड़ियों पर खड़ी भूरे अनगढ़ पत्थरों की टूटी दीवारों वाले तुगलकाबाद को वास्तुशिल्प की दृष्टि से एक दुर्ग के रूप में स्थापित किया गया था। यह किला दो भागों में विभाजित है – दक्षिणी दीवारों के साथ-साथ नगर दुर्ग और महल इसका एक भाग है और इसके उत्तर में बसा नगर दूसरा भाग है। यह 6 कि.मी. की किलेबन्दी एक अनियमित आयत है। दक्षिण में, तुगलकाबाद के मुख्य प्रवेश द्वार के पार गयासुद्दीन तुगलक का मकबरा है। इसका अग्रभाग लाल बलुआ पत्थरों से बना है जिसे संगमरमर द्वारा उभारा गया है। यह ऊँची दीवारों से घिरा है जो एक अनियमित पंचभुज बनाती हैं। तीन ओर इसके चापाकार दरवाजों के भीतरी भाग में 'भालाकार हाशिये' होने और इसकी रंग योजना के बावजूद भी इसमें खिलजी काल की वास्तुकला की कुछ विशेषताएं देखने को मिलती हैं।

नगर दुर्ग अभी भी अखंड खडा है और महल की दीवारों की पहचान अभी भी की जा सकती है।

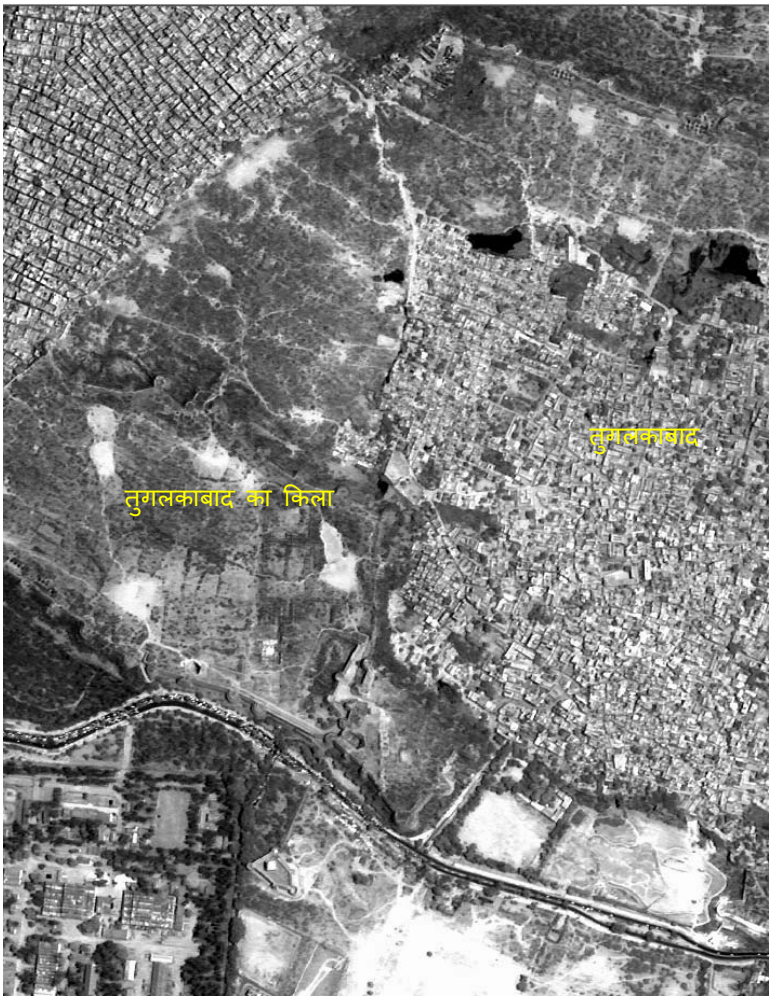

तुगलकाबाद का किला (कार्टो-२)

डीग का किला

भरतपुर जिले में स्थित डीग को ऐतिहासिक रूप से अठाहरवीं शताब्दी के जाट शासकों के मजबूत शासन के साथ जोड़ा जाता है। बदन सिंह (1722 -56 ई.) ने सिंहासन प्राप्त करने के पश्चात् समुदाय प्रमुखों को एकजुट किया तथा इस प्रकार वह भरतपुर में जाट घराने का प्रसिद्ध संस्थापक बना। बदन सिंह के पुत्र सूरजमल ने 1730 ई. में बहुत ऊँची दीवारों तथा बुर्जो वाला एक मजबूत महल बनवाया था। डीग की वास्तुकला का प्रतिनिधित्व मुख्य रूप से हवेलियों द्वारा किया जाता है जिन्हें भवन कहा जाता है।

इन भवनों में गोपाल भवन, सूरज भवन, किशन भवन, नंद भवन, केशव भवन, हरदेव भवन शामिल हैं। संतुलित रूपरेखा, उत्कृष्ट परिमाप, लंबे व चौड़े हॉल, आकर्षक तथा सुव्यवस्थित मेहराब, आकर्षक जलाशय तथा फव्वारों सहित नहरें इन महलों की ध्यानाकर्षक विशेषताएं हैं। डीग बागों का अभिविन्यास औपचारिक रूप से मुगल चारबाग पद्धति पर किया गया है तथा इसके बगल में दो जलाशय - रूप सागर तथा गोपाल सागर हैं।

डीग महल के भीतर कुछ महत्वपूर्ण स्मारक हैं जैसे - सिंह पोल जो महल परिसर का प्रमुख प्रवेश द्वार है।

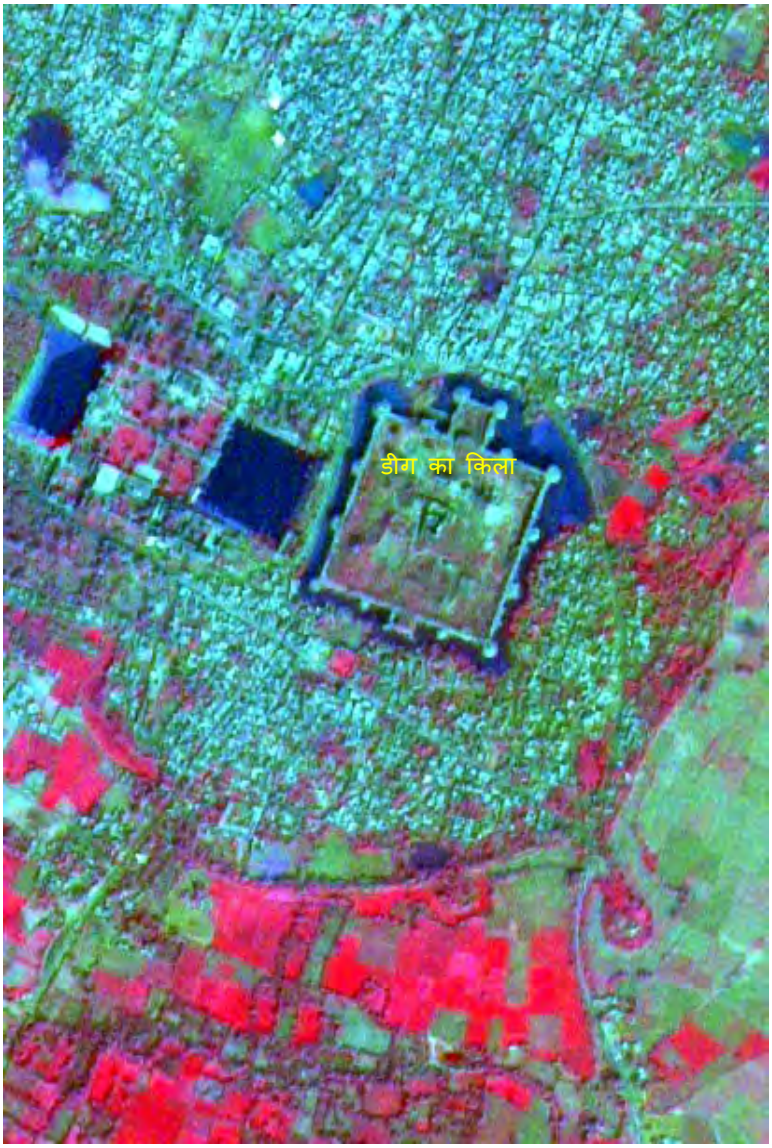

डीग का किला (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

प्रतापगढ़ का किला

प्रतापगढ़ महाराष्ट्र राज्य के सतारा जिले में, प्रसिद्ध हिल स्टेशन महाबलेश्वर से लगभग 22 किमी की दूरी पर स्थित है। इस किले को दो भागों में बाँटा जा सकता हैः ऊपरी किला तथा निचला किला। ऊपरी किला पहाड़ी के शिखर पर बनाया गया था। यह मोटे तौर पर वर्गाकार आकृति का है जो प्रत्येक ओर से लगभग 180 मी. लम्बा है। इसमें कई स्मारक हैं जिनमें से एक भगवान महादेव का मंदिर भी है। यह किले के उत्तर-पश्चिम में स्थित है। निचला किला लगभग 320 मीटर लम्बा और 110 मी. चौड़ा है। यह किले के दक्षिणपूर्व में स्थित है और दस से बारह मीटर ऊँची मीनारों तथा बुर्जो द्वारा सुरक्षित है। किले के आसपास के क्षेत्रों की निगरानी किले के हर तरफ से आसानी से की जा सकती है। किले का दक्षिणी हिस्सा चट्टानी है जबकि पूर्वी हिस्सा अफजल बुर्ज पर खत्म होता है। किले की एक खास विशेषता यह है कि इसके सभी पक्षों पर दोहरी दीवार है तथा उनकी ऊँचाई जमीन की प्रकृति के अनुसार अलग-अलग है।

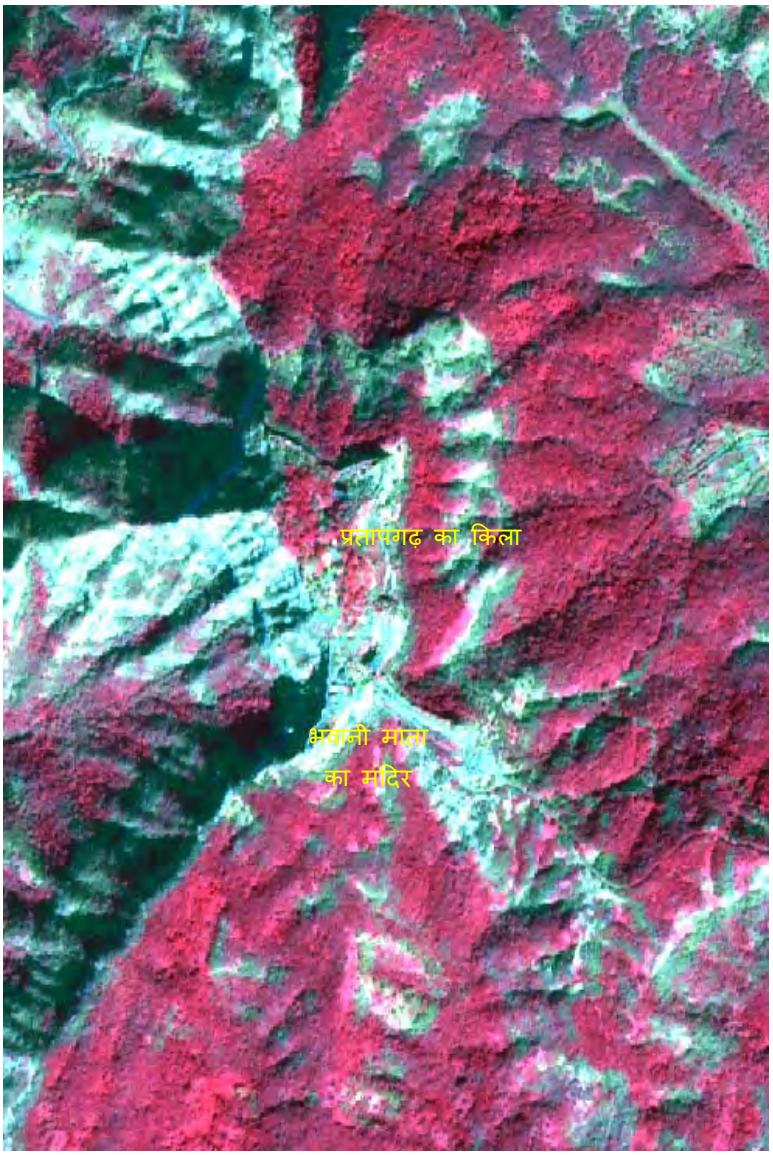

प्रतापगढ़ का किला (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

कित्तूर का किला

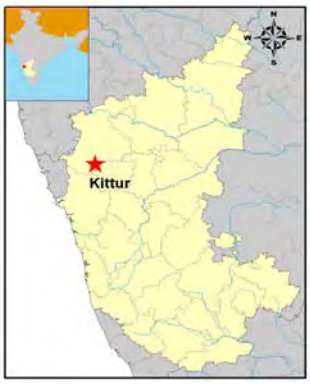

कित्तूर कर्नाटक के बेलगाम जिले में स्थित प्रसिद्ध एवं ऐतिहासिक जगह है। यह छोटा-सा शहर कित्तूर चेन्नम्मा फोर्ट के लिए जाना जाता है। यह किला कर्नाटक की प्रसिद्ध एवं महान रानी चेन्नम्मा के नेतृत्व में स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने की गवाही के रूप में खड़ा है जो अंग्रेजों के आबंटित हस्तक्षेप और कर संग्रह के खिलाफ लड़ीं थीं। आज यह किला एक महान रानी की बहादुरी एवं महिलाओं के गौरव के प्रतीक के रूप में खड़ा है।

वर्तमान में कित्तूर नथपंथी मठ स्थल के साथ खंडहरों में निहित है। मारूत, चालुक्य और क्षेत्रों आदि बसवान्ता ,कलमेश्वरा स्मारक को पुनःनिर्मित किया जा रहा है। यहाँ एक पुरातात्विक संग्रहालय भी है जो राज्य के पुरातत्त्व और संग्रहालय विभाग द्वारा प्रबंधित एवं संचालित किया जाता है। कित्तूर एक पुरातात्विक स्थल के रूप में महत्वपूर्ण हैं।

कित्तूर का किला (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

जिंजी का किला

जिंजी शहर, राज्य तमिलनाडु के विल्लुपुरम जिले में स्थित है। यह शहर अपने जिंजी किले के लिए प्रसिद्ध है एवं पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है। यह प्राचीन किला तमिलनाडु राज्य के प्राचीन बचे हुए किलों में से एक है। यह किला नौवीं शताब्दी के दौरान चोला राजवंश के द्वारा निर्मित किया गया था। मूल रूप में यह किला बहुत छोटा था, बाद में तेरहवीं शताब्दी में विजयनगर के सम्राटों द्वारा इसका पुनरुद्धार किया गया।

यह मजबूत किला उस समय जिंजी शहर की रक्षा के लिए बनवाया गया था। जिंजी के बाहरी दुर्ग त्रिकोणीय अवस्था में तीन पहाड़ियों पर स्थित हैं, उनमें कृष्णागिरी उत्तर में, राजगिरी पश्चिम में और चंद्रयान दुर्ग दक्षिण-पूर्व में स्थित है और बीच में रिक्त स्थान है। दुर्ग की लंबाई 13 किमी और क्षेत्रफल लगभग 11 वर्ग किमी है। वर्तमान मे यह किला एक संग्रहालय के रूप में कार्य करता है। यहाँ कल्याण महल, चैंजीअम्मन मंदिर जैसी संरक्षित इमारत हैं। आंतरिक दुर्ग को बनाते समय रहने वालों की जरूरतों एवं सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा गया था। आंतरिक दुर्ग के बाहर की संरचनाओं में वेंकटरमण मंदिर, प्राचीन जिंजी मंदिर एवं सदातुल्लाह खान मस्जिद शामिल हैं।

जिंजी का किला (कार्टो-१)

गांदीकोटा का किला

गांदीकोटा एक छोटा गाँव है जो पेन्नार नदी के किनारे बसा हुआ है। यह गाँव भारत के आंध्रप्रदेश राज्य में, कडप्पा जिले में स्थित है। यह छोटा-सा गांव गांदीकोटा के किले के लिए प्रसिद्ध है। इस किले का निर्माण कापा राजा ने 1123 ए.डी. में करवाया था, जो पश्चिमी चालुक्य राजा अहावामल्ला सोमेश्वर -1 के अधीन कार्य करता था। इस छोटे से गाँव ने काकतिया, विजयनगर और कुतुबशाही अवधि के दौरान एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस किले को पेम्मासानी थिम्मा नायडू द्वारा और भी मजबूत बनवाया गया। यह किला लगभग 300 वर्षो तक पेम्मासानी नायकों के नियंत्रण में रहा।

किले का नाम एक घाटी के नाम के कारण पड़ा जिसे तेलगू में गांदी कहा जाता है। यह ईरामाला पहाड़ियों की श्रृखंला के बीच गठित है तथा इसके नीचे पेन्नार नदी बहती है। इस किले में एक मस्जिद, एक बड़ा अन्न भंडार एवं मंदिर हैं। जामिया मस्जिद में दो आसन्न मीनारें हैं। गुबंददार छत के साथ अन्न भंडार अब यात्री बंगले के रूप में हैं किले के अंदर दो मंदिर है जो भगवान माधव और रघुनाथ को समर्पित हैं।

गांदीकोटा का किला (रिसौर्ससेट लिस-४)

दौलताबाद का किला

दौलताबाद महाराष्ट्र राज्य के औरंगाबाद शहर के उत्तर-पश्चिम में लगभग 14 किमी की दूरी पर स्थित है। इसका प्राचीन नाम 'देवगिरी' था। इसका तत्कालीन नाम दौलताबाद, मुहम्मद बिन तुगलक के द्वारा दिया गया था, जब उसने 1327 ई. में दौलताबाद को अपनी राजधानी बनाया। दिल्ली से अपनी राजधानी दौलताबाद स्थानांतरित करने के मुहम्मद बिन तुगलक को गंभीर नतीजे भुगतने पड़े और उसे फिर अपनी राजधानी दिल्ली स्थानांतरित करनी पड़ी।

इसके बाद यह क्षेत्र और दौलताबाद का किला बहमनी शासक हसन गंगु के हाथों में चला गया। इस तरह यह किला अलग-अलग शासकों के कब्जे में आता रहा जैसे मुगल, पेशवा इत्यादि। अंत में 1724 ई. में यह किला हैदराबाद के निजामों के नियंत्रण में आ गया और स्वतंत्रता तक उन्हीं के नियंत्रण में रहा। दौलताबाद का किला मध्ययुगीन अवधि के दौरान सबसे शक्तिशाली किलों में एक था। यह किला 200 मीटर ऊंची पहाड़ी पर निर्मित था तथा अपनी जटिल सुरक्षा प्रणाली के कारण अभेद्य माना जाता था।

इस तरह अपने शक्तिशाली एवं गौरवपूर्ण इतिहास के कारण यह किला आज भी प्रसिद्ध है।

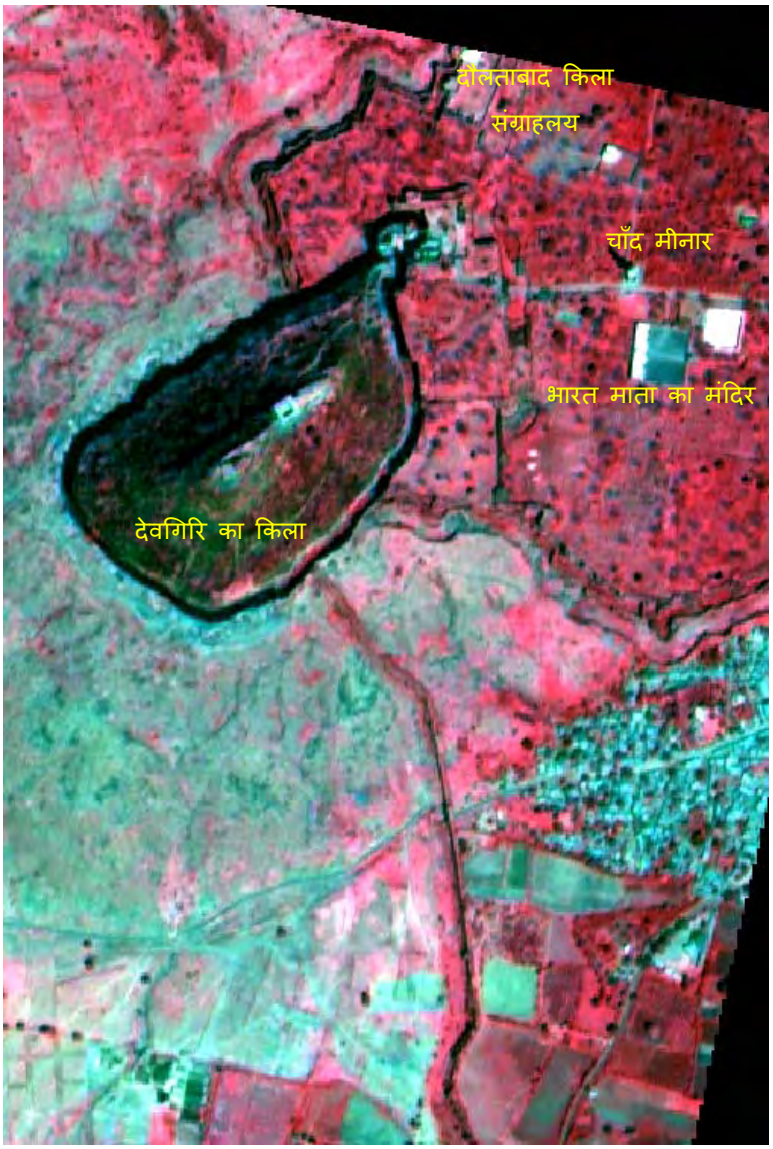

दौलताबाद का किला (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

इन्डो-इस्लामिक स्थल

ताजमहल

आगरा में स्थित ताजमहल भारत के गौरव एवं प्रेम का प्रतीक चिह्न माना जाता है। यह विश्व की दर्शनीय इमारतों में से एक है, जो विश्वभर के पर्यटकों को आकर्षित करती है। मुगलकाल की भव्यता और अमर प्रेम का प्रतीक ताजमहल सफेद पत्थरों से निर्मित एक विशाल एवं भव्य मकबरा है जो यमुना नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। इस भव्य मकबरे का निर्माण मुगल बादशाह शाहजहां ने अपनी प्रिय बेगम मुमताज महल की याद में करवाया था।

ताजमहल का निर्माण 1631 ई. में प्रारम्भ हुआ तथा लगभग 20 हजार श्रमिकों और शिल्पियों के रात-दिन परिश्रम के बाद 1652 ई. में पूरा हुआ। ताजमहल पूरी तरह से सफेद संगमरमर से बनाया गया है। ताजमहल इमारत समूह संरचना की खास बात है कि यह पूर्णतया सममितीय है। ताजमहल की मुख्य इमारत एक विशालकाय चबूतरे पर खड़ी है, जिसके चारों कोनों पर बड़ी-बड़ी मीनारें हैं। इन मीनारों के बीच विशालकाय गुंबद है, जिसमें मुमताज महल तथा शाहजहां की नक्काशीदार कब्रें हैं। इन कब्रों के चारों ओर भव्य नक्काशीदार जालियां भी विशिष्ट रूप से दर्शनीय हैं। गुबंद की दीवारों पर भी चारों ओर उच्च श्रेणी के नक्काशीदार बेलबूटे बने हुए हैं।

इस प्रकार केन्द्र में बना मकबरा अपनी वास्तु श्रेष्ठता एवं सौंदर्य का परिचय देता है। 1983 ई. में ताजमहल को यूनेस्को विश्व धरोहर घोषित किया गया।

ताजमहल (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

बीबी का मकबरा

बीबी का मकबरा मुगल सम्राट औरंगजेब (1658-1707 ई.) की पत्नी रबिया-उल-दौरानी उर्फ दिलरास बानो बेगम का एक सुंदर मकबरा है। ऐसा माना जाता है कि इस मकबरे का निर्माण राजकुमार आजम शाह ने अपनी माँ की स्मृति में 1651 ई. से 1661 ई. के दौरान करवाया। मुख्य प्रवेश द्वार पर पाए गए एक अभिलेख में यह उल्लेख है कि यह मकबरा अताउल्ला नामक एक वास्तुकार और हंसपत राय नामक एक इंजीनियर द्वारा अभिकल्पित और निर्मित किया गया। इस मकबरे का प्रेरणा स्रोत आगरे का विश्व प्रसिद्ध ताजमहल रहा जिसका निर्माण 1631 ई. और 1652 ई. के बीच हुआ और इसलिये इसे दक्कन के ताज के नाम से जाना जाता है।

यह मकबरा एक विशाल अहाते के केन्द्र में स्थित है जो अनुमानतः उत्तर दक्षिण में 458 मीटर और पूर्व-पश्चिम में 275 मीटर है। इस मकबरे में प्रवेश के लिए, इसकी दक्षिण दिशा में लकड़ी का द्वार है जिस पर बाहर की ओर से पीतल की प्लेट पर बेल-बूटे के उत्कृष्ट डिजाइन हैं। प्रवेश द्वार से गुजरने के बाद एक छोटा-सा कुण्ड और साधारण आवरण दीवार है जो मुख्य संरचना की ओर जाती है। यह मकबरा एक ऊँचे-वर्गाकार चबूतरे पर बना है और इसके चारों कोनों में चार मीनारें हैं। इसमें तीन ओर से सीढ़ियों द्वारा पहुँचा जा सकता है।

इस मकबरे में रबिया-उल-दौरानी के मानवीय अवशेष भूतल के नीचे रखे गए हैं जो अत्यन्त सुंदर डिजाइनों वाले एक अष्टकोणीय संगमरमर के आवरण से घिरा हुआ है।

बीबी का मकबरा (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

कुतुबमीनार

कुतुबमीनार दुनिया की कुछ महत्वपूर्ण ऊँची इमारतों में से एक है। कुतुब मीनार का निर्माण गुलाम वंश के संस्थापक कुतुबुउद्दीन ऐबक ने 1199 ई. में शुरू करवाया था और कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु के पश्चात इल्तुतमिश ने 1368 ई. में इसे पूरा कराया, शायद इसीलिये इसकी पांचों मंजिलों का स्थापत्य अलग-अलग है। इसकी कुल ऊँचाई 75 मी है। इसकी प्रथम तीन मंजिले लाल बलुआ पत्थर पर नक्काशी करके बनाई गई हैं। जबकि बाकी मंजिलों का निर्माण लाल बलुआ पत्थर तथा संगमरमर के मिले-जुले प्रयोग से हुआ है।

कुतुबमीनार परिसर में ही लचीले पिटवां ठोस लोहे से बना एक लौह स्तम्भ भी है जिसका निर्माण 1600 ई. में हुआ था। यह स्तम्भ विश्व के समक्ष एक आश्चर्य के रूप में खड़ा हुआ है। इस स्तम्भ पर कहीं भी जंग नहीं लगी है। यह लौह-स्तम्भ भारतीय लौह ढलाई के सबसे प्राचीन प्रमाण के रूप में विद्यमान है। विश्व में कहीं भी इतना लंबा ठोस और इतना प्राचीन लौह स्तम्भ नहीं मिलता। कुतुब मीनार परिसर में और भी कई इमारते हैं।

भारत की पहली कबूबत उल इसलाम मस्जिद, अलई दरवाजा और इल्तुतमिश का मकबरा भी यहाँ बना हुआ है। मस्जिद के पास ही चौथी शताब्दी में बना लौह स्तंभ भी है जो पर्यटकों को खूब आकर्षित करता है।

कुतुबमीनार (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-२ संमिश्रित)

हुमायूँ का मकबरा एवं पुराना किला

हुमायूँ एक महान मुगल बादशाह था जिसकी मृत्यु शेर मंडल पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिर कर हुई थी। हुमायूँ का मकबरा उनकी पत्नी हाजी बेगम ने हुमायूँ की याद में बनवाया था। 1562-1572 ई. के बीच बना यह मकबरा आज दिल्ली के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है। इसके फारसी वास्तुकार मिरक मिर्जा गियायशु की छाप इस इमारत पर साफ देखी जा सकती है। यह मकबरा यमुना नदी के किनारे संत निजामुद्दीन औलिया की दरगाह के पास स्थित है। यूनेस्को ने इसे विश्व धरोहर का दर्जा दिया है।

इस किले का निर्माण सरवंश के संस्थापक शेर शाह सूरी ने 16वीं सदी में करवाया था। 1539-40 ई. में शेरशाह सूरी ने अपने चिर प्रतिद्वंदी मुगल बादशाह हुमायूँ को परास्त कर दिल्ली और आगरा पर कब्जा कर लिया। 1545 ई. में उनकी मृत्यु के बाद हुमायूँ ने पुन: दिल्ली और आगरा पर अधिकार कर लिया था। शेरशाह सूरी द्वारा बनावाई गई लाल पत्थरों की इमारत शेरमंडल में हुमायूँ ने अपना पुस्तकालय बनवाया। इसमें प्रवेश करने के तीन दरवाजे हैं - हुमायूँ दरवाजा, तलकी दरवाजा और बड़ा दरवाजा, लेकिन आजकल केवल बड़ा दरवाजा ही प्रयोग में लाया जाता है। सभी दरवाजे दो मंजिला हैं। ये विशाल द्वार लाल पत्थर से बनाए गए हैं।

यह किला कई शासकों का शासन देख चुका है एवं अनेक शासकों के उतार चढ़ावों का साक्षी रहा है।

हुमायूँ का मकबरा और पुराना किला (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-२ संमिश्रित)

गोल गुम्बद

गोल गुम्बद कर्नाटक राज्य के बीजापुर में स्थित है। यह मोहम्मद आदिल शाह (1626-56 ई.), आदिल शाही वंश के सातवें शासक का मकबरा है। यह विशाल मकबरा, आदिल शाही वास्तुकला का महत्वपूर्ण उदाहरण है। जटिल शिल्प कौशल के 20 वर्षों के बाद, गोल गुम्बद का निर्माण 1656 ई. में पूरा हुआ। 1626 ई. में सिंहासन में बैठते ही सुलतान ने मरणोपरान्त अपने पार्थिव शरीर को दफनवाने के लिए इस भवन का निर्माण शुरू करवा दिया।

इसी मकबरे में एक विशाल कोठरी में फर्श के नीचे परिवार के अन्य सदस्यों को भी साथ में दफनाया गया। यह किला अपने भारत-इस्लामी वास्तुकला एवं अद्‌वितीय ध्वनिक सुविधाओं के लिए जाना जाता है। एक जोर की ताली की गूंज भी लगभग दस बार सुनाई देती है। यह भवन अपने विशाल गुम्बद के लिए प्रसिद्ध है।

गोल गुम्बज (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

महल

उम्मेद पैलेस जोधपुर

उम्मेद पैलेस, राजस्थान के जोधपुर शहर में स्थित है। यह विश्व के सबसे बड़े निजी घरों में से एक है। महल का एक हिस्सा ताज होटल के द्वारा प्रबंधित किया जाता है। इस महल का नाम, महल के वर्तमान मालिक के दादा, महाराज उम्मेद सिंह के नाम पर रखा गया। इस स्मारक में लगभग 347 कमरे हैं और यह तत्कालीन जोधपुर के शाही परिवार के प्रमुख निवास के रूप में प्रयोग में लाया जाता रहा है। इस महल का निर्माण 1929 से 1944 ई. के बीच किया गया था।

इसकी परिकल्पना मूल रूप से एक सूखा राहत के उपाय के रूप में की गई थी और इसे बनवाने का उद्देश्य लगभग 3000 सूखा-पीड़ितों को रोजगार प्रदान करना था। इस महल के वर्तमान मालिक महाराज गजसिंह हैं। यह डेको वास्तुकला का एक शानदार उदाहरण है। यह अति सुंदर महल चित्तर महल के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि इसके निर्माण में स्थानीय चित्तर में प्रयोग किया जाने वाला बलुआ पत्थर उपयोग में लाया गया था।

उम्मेद पैलेस जोधपुर (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

मैसूर

मैसूर का महल, कर्नाटक राज्य के मैसूर शहर में स्थित है। इस भित्तियुक्त एवं भारत-सीरियाई स्थापत्य कला के उत्कृष्ट उदाहरण का सुंदर पार्श्व दृश्य मैसूर के महाराजा का आसन है। इसी स्थान पर स्थित पूर्व का एक महल 1897 ई.में जलकर राख हो गया था। तत्पश्चात् इस वर्तमान महल का निर्माण 1912 ई. में किया गया। इस महल को अम्बा विलास महल के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। मैसूर के पूर्व महाराजा इस महल के पीछे बने आवासों में ठहरते हैं। अन्दर से यह महल धब्बेदार शीशों की उपस्थिति के कारण बहुरूपदर्शी है। इन दर्पणों पर देवीय रंग का मुलम्मा चढ़ाया गया है। महल के ऊपरी भाग में लकड़ी की नक्काशी युक्त द्वार तथा चित्रित फर्श हैं।

इस महल के आंगन के मध्य में हिन्दू मंदिरों का संग्रह है। इन मंदिरों में से सर्वप्रमुख मन्दिर 'श्वेता वाराह स्वामी' मन्दिर है। महल के अन्दर एक संग्रहालय भी स्थित है। महल के उत्तरी द्वार पर महाराजा चाम राजेन्द्र वोडेयार की प्रतिमा स्थापित है। मैसूर का नाम महिषासुर के नाम पर रखा गया है। वह एक दुष्ट और अत्याचारी राजा था जिसका वध चामुण्डा देवी (चामुण्डेश्वरी) ने किया था। मैसूर की चामुण्डा पहाड़ी पर आज भी महिषासुर की एक बड़ी सी मूर्ति खड़ी है।

इसके निकट ही चामुण्डा देवी का दो हजार वर्ष पुराना मंदिर बना हुआ है। चामुण्डा मैसूर के राजपरिवार की कुलदेवी मानी जाती थीं।

मैसूर पैलेस (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

बौद्ध धार्मिक स्थल

सांची

अपने बौद्ध स्तूपों के लिए प्रसिद्ध एवं युनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में प्रख्यात सांची एक छोटा-सा गाँव है। यह गाँव मध्य प्रदेश राज्य के रायसेन-जिले में स्थित है। यह भोपाल से लगभग 46. कि.मी. पूर्वोत्तर में स्थित है। इस ऐतिहासिक एवं पवित्र बौद्ध धार्मिक स्थल में सहेजे गए स्तूप एवं स्मारक तीसरी शताब्दी ई.पू. से बारहवीं शताब्दी के बीच के काल के हैं। इस स्मारक को 1989 ई. में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया। सम्राट अशोक ने ही सांची में एक बौद्ध धार्मिक स्थल की आधारशिला रखी थी और स्तूपों का निर्माण करवाया था। यह निर्माण भगवान बुद्ध के अवशेषों को सम्मान से रखने के लिए किया गया था। इस स्तूप को घेरे हुए कई तोरण बनाए गए जो साहस और शांति का प्रतीक हैं। स्तूप के शिखर में एक सम्मान का प्रतीक छत्र है। तोरण एवं परिक्रमा सातवाहन वंश द्वारा निर्मित प्रतीत होते हैं।

स्तूप यद्यपि पाषाण निर्मित हैं, किंतु काष्ठ की शैली में गढ़े हुए तोरण, वर्णात्मक शिल्पों से परिपूर्ण हैं। इस प्रकार यह स्मारक आज भी बौद्ध धर्म की पवित्रता, गरिमा को प्रदर्शित करता है।

साँची (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

सारनाथ

सारनाथ, उत्तर प्रदेश राज्य के वाराणसी शहर से लगभग 11 कि.मी. दूरी पर स्थित बौद्धों का प्राचीन तीर्थ है। ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् भगवान बुद्ध ने अपना पहला धर्मोपदेश यहीं दिया था। सारनाथ के संदर्भ में ऐतिहासिक जानकारी पुरातत्त्वविदों को उस समय हुई जब काशी नरेश चेतसिंह के दीवान जगत सिंह ने धर्मराजिका स्तूप को अज्ञानतावश खुदवा डाला। इस घटना से जनता का आकर्षण सारनाथ की ओर बढ़ा। भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा समय-समय पर उत्खनन करवाया जाता रहा जिससे कई मठों, स्तूपों, मूर्तियों जैसे अन्य पुरावशेषों का पता चला।

सारनाथ की सबसे भव्य संरचना धम्मेख स्तूप है, इसकी ऊँचाई 33.5 मीटर है। सारनाथ की एक और उल्लेखनीय संरचना चौखंड़ी स्तूप है यह मुख्य परिसर से आधा कि.मी. दूरी पर स्थित है। सम्राट अशोक के समय सारनाथ में बहुत से निर्माण कार्य हुए। सिहों की मूर्ति वाला भारत का राजचिह्न सारनाथ के अशोक स्तंभ के शीर्ष से लिया गया है।

सारनाथ में कई विहार हैं उनमें मूल गंधकुटी विहार मुख्य है जो धर्मराजिका स्तूप के उत्तर में स्थित है। सारनाथ में उत्खनन से प्राप्त पुरावशेष भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण द्वारा बनाए गए संग्राहालय में सरंक्षित किए गए है।

सारनाथ (कार्टो-२)

लोरिया नदंनगढ़

लोरिया नदंनगढ़ गाँव, बिहार राज्य के बेतिया जिला मुख्यालय से लगभग 28 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। बूढ़ी गडंक नदी के किनारे बसा यह गाँव वहाँ स्थित दो अशोक स्तंभों एवं स्तूप टीलों के लिए प्रसिद्ध है। लोरिया में 15 स्तूप टीले हैं जो तीन पंक्तियों में हैं, उनमें पहली पंक्ति स्तंभ के पास से शुरू होती है और पूर्व से पश्चिम की ओर चली जाती है जबकि अन्य दो, पहली पंक्ति से समकोण पर हैं और एक दूसरे से सामान्तर हैं। इनमें से एक का उत्खनन पहली बार ए.कनिंघम ने किया था और खुदाई में ईंट की दीवार (51 x 20 से.मी.) बनी हुई पाई थी।

उस खुदाई में एक सोने की पत्ती मिली जिसमें महिला की आकृति बनी हुई थी और लकड़ी के कोयले के साथ मिश्रित मानव हड्डियों की जली हुई धरोहर मिली। उनके अनुसार स्तूप टीले पीली मिट्टी से बने हुए थे और कुछ सेंटीमीटर चौड़ाई के थे, बीच में कुछ घास की पत्तियाँ बिछी हुईं थीं। इसके अलावा उनमें से एक में नीचे एक पेड़ का ठूँठ पाया गया। सन् 1935 में एन.जी. मजूमदार ने चार स्तूप टीलों का फिर से निरीक्षण किया और पाया कि वे मिट्टी में दफन स्मारक थे।

उन्होंने यह भी बताया कि वहाँ मिली सुनहरी पत्ती पिपराहवा में स्थित स्तूप की सटीक प्रतिकृति है जो निश्चित ही 300 ई.पूर्व एक बौद्ध स्तूप था। गाँव से लगभग आधा कि.मी. एवं टीलों से लगभग 2 कि.मी. की दूरी पर अशोक स्तंभ है, इसकी ऊँचाई लगभग 32 फीट है। स्तंभ बड़े ही खूबसूरत एवं स्पष्ट अक्षरों में अशोक के शिलालेखों से खुदा हुआ है।

लोरिया नन्दनगढ़ (कार्टो-१)

विक्रमशिला

विक्रमशिला बिहार राज्य के भागलपुर जिले में स्थित है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना पाल वंश के राजा धर्मपाल ने 775-800 ई. में की थी। तिब्बत के साथ इस शिक्षा केन्द्र का प्रारम्भ से ही विशेष संबंध रहा है। यहाँ से अनेक विद्वान तिब्बत गये थे तथा वहाँ उन्होंने कई ग्रन्थों का तिब्बती भाषा में अनुवाद किया। इन विद्वानों में सबसे अधिक प्रसिद्ध दीपंकर श्रीज्ञान थे जो उपाध्याय अतीश के नाम से प्रसिद्ध हैं। विक्रमशिला का पुस्तकालय बहुत समृद्ध था। विश्वविद्यालय के कुलपति 6 भिक्षुओं के एक मंडल की सहायता से प्रबन्ध तथा व्यवस्था करते थे। यहाँ बौद्ध धर्म और दर्शन के अतिरिक्त न्याय, तत्वज्ञान, व्याकरण आदि की भी शिक्षा दी जाती थी।

यहाँ देश से हीं नहीं, विदेशों से भी अध्ययन के लिये छात्र आते थे। पूर्व मध्ययुग में इस विश्वविद्यालय के अतिरिक्त कोई शिक्षा केन्द्र इतना महत्वपूर्ण नहीं था कि सुदूर प्रान्तों के विद्यार्थी जहाँ अध्ययन के लिये जायें। इस विश्वविद्यालय के अनेकानेक विद्वानों ने विभिन्न ग्रन्थों की रचना की, जिनका बौद्ध साहित्य और इतिहास में नाम है। इन विद्वानों में से कुछ प्रसिद्ध नाम हैं - रक्षित, विरोचन, ज्ञानपाद, बुद्ध, जेतारि, रत्नाकर, शान्ति, जनश्री मिश्र, रत्नवज्र और अभयंकर।

अब इस विश्वविद्यालय के मात्र खंडहर ही अवशेष हैं। यह मुख्य रूप से बौद्ध धर्म का प्रसार करने के लिये स्थापित किया गया था। बख्तियार खिलजी के आक्रमण ने इस विश्वविद्यालय को जड़ से उखाड़ दिया।

विक्रमशिला (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

नागार्जुनकोंडा

नागार्जुनकोंडा एक धार्मिक एवं ऐतिहासिक नगर है जो आंध्र प्रदेश के नालगोंडा जिले में स्थित है। यह हैदराबाद से उत्तरी-पूर्व दिशा में लगभग 150 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। ऐसा कहा जाता है कि यह स्थान तब बना जब एक पहाड़ नागार्जुन सागर के पानी में लगभग आधा डूब गया। नागार्जुनकोंडा भारत के प्रसिद्ध एवं मान्यता प्राप्त बौद्ध धार्मिक स्थलों में से एक है। पुराने काल में इसे श्री पर्वत के नाम से जाना जाता था। यह धार्मिक स्थान बौद्ध धर्म के प्रसिद्ध आचार्य नागार्जुन के नाम से प्रसिद्ध है जिन्होंने द्वितीय शाताब्दी में बौद्ध धर्म के लिए बहुत कार्य किए।

आज से लगभग 50 वर्ष पूर्व यहाँ से नौ बौद्ध स्तूप उत्खनित किए गए थे। यह स्तूप इस स्थान के गौरव व ऐश्वर्य के साक्षी है।

उत्खनन में प्राप्त अवशेषों में एक स्तूप, दो चैत्य और एक विहार है। नागार्जुन से प्राप्त अभिलखों से यह पता चलता है कि ईसा की पहली शताब्दी में भारत के चीन, श्रीलंका और यूनानीजगत से अच्छे संबंध थे।

नागार्जुनकोंडा (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

बोधगया

बोधगया बौद्धों का सबसे बड़ा तीर्थ है। बिहार राज्य में गया नगर से लगभग 13 कि.मी. की दूरी पर दक्षिण में स्थित बोधगया वह पवित्र स्थान है, जहाँ भगवान बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था और इस तरह विश्व के एक बड़े भू-भाग में फैलने वाले बौद्ध धर्म का जन्म हुआ। इस विश्व प्रसिद्ध स्थान पर पीपल के एक वृक्ष के नीचे बैठकर गौतम बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था। गौतम बुद्ध को बोध (ज्ञान) प्राप्त होने के कारण इस स्थान का नाम बोधगया पड़ा तथा जिस पीपल के वृक्ष के नीचे समाधि लगायी थी, वह बोधि वृक्ष कहलाया। इस वृक्ष की जड़ों से निकला हुआ पेड़ ढ़ाई हजार वर्ष से अधिक समय बीत जाने पर भी आज बोधगया में मौजूद है।

सम्राट अशोक ने यहाँ एक मंदिर बनवाया था। अब उस मंदिर के चिह्न तो नहीं मिलते किंतु अशोक के शिलालेखों से यह पता चलता है कि बोधगया का सबसे महत्वपूर्ण स्मारक महाबोधि मंदिर है। यह भारतीय वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना है। ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार महाबोधि मंदिर आज से लगभग साढ़े तेरह सौ साल पहले बना था। 170 फुट ऊँचे इस मंदिर के चारों कोनों पर चार शिखर बनाए गए हैं, जो इसकी भव्यता को और भी बढ़ाते हैं। प्रागंण में अनेक स्तूप हैं।

मंदिर का प्रवेश द्वार बहुत ही आकर्षक है। बोधिवृक्ष के नीचे का चबूतरा वज्रासन कहलाता है। इसके अलावा यहाँ दुर्गेश्वरी मंदिर, लोटस टैंक, पुरातत्त्व संग्रहालय, भूटान व श्रीलंका के बौद्ध मठ आदि दर्शनीय पवित्र स्थान हैं।

बोधगया (कार्टो-१)

नालन्दा

नालन्दा भारत के बिहार राज्य में शिक्षा का प्राचीन केन्द्र था। यहाँ विश्व के प्राचीनतम विश्वविद्यालय के अवशेष हैं जो बोधगया से 62 कि.मी. तथा पटना से 90 कि.मी. दक्षिण में है। ह्वेनसांग ने 7वीं सदी में यहाँ निवास किया था तथा उसने यहाँ की महान शिक्षा पद्धति तथा यहां की सादी मठवासी जीवन के अभ्यास का वर्णन किया है। यहाँ विश्व की प्रथम अंतर्राष्ट्रीय आवासीय महाविद्यालय में 2000 शिक्षक तथा 10,000 बौद्ध भिक्षु विद्यार्थी रहते थे और शिक्षा ग्रहण करते थे।

गुप्ता राजाओं ने प्राचीन कुषाण वास्तुशैली में बनाये गये मठों को एक आंगन के आसपास एक पंक्ति में सुरक्षित किया। महाराज अशोक और हर्षवर्धन उन कुछ संरक्षकों में से एक हैं जिन्होंने यहाँ मंदिरों, मठों और विहारों का निर्माण किया। हाल की खुदाई से विस्तृत संरचनाओं का पता लगाया गया है। सन् 1951 में बौद्ध अध्ययन के लिये यहाँ एक अन्तर्राष्ट्रीय केंद्र की स्थापना की गई।

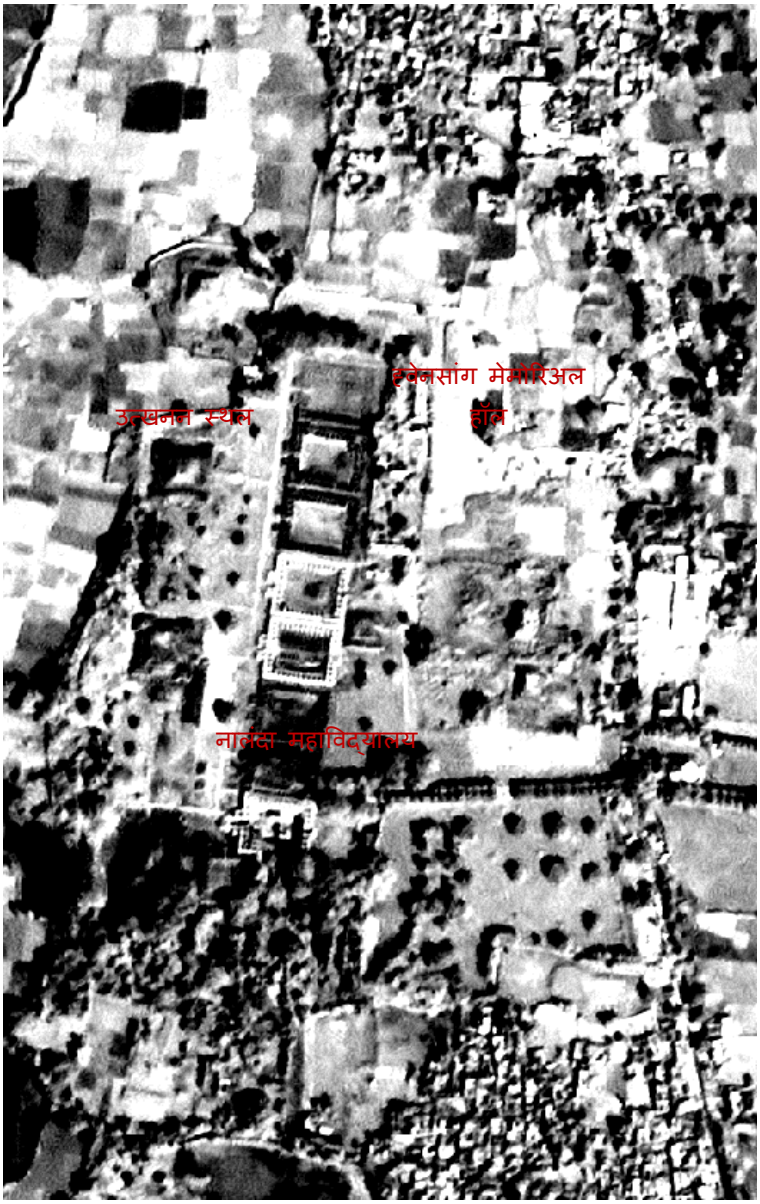

नालन्दा (कार्टो-२)

हड़प्पा सभ्यता स्थल

कालीबंगा

कालीबंगा राजस्थान राज्य के हनुमानगढ़ जिले का प्राचीन एवं ऐतिहासिक स्थल है जो घग्घर नदी के किनारे स्थित है। यह नदी प्राचीनकाल में सरस्वती के नाम से जानी जाती थी जो सूखकर लुप्त हो गई थी। कालीबंगा एक छोटा नगर था और यहाँ हड़प्पा सभ्यता के कई अवशेष मिले हैं। यह तीन टीलों से मिलकर बना है। सबसे बड़ा टीला बीच में, छोटा टीला पश्चिम में और सबसे छोटा टीला पूर्व में स्थित है। पूर्व हड़प्पा की बस्ती सामान्तर चतुर्भुज आकार में और किलाबद्ध थी। दुर्ग की दीवारें मिट्टी के ईंटों से बनाई गई थीं।

इस अवधि की विशेषता मिट्टी के बर्तन थे जो आगे की हड़प्पा सभ्यता से काफी अलग थे। उस समय की सबसे उत्कृष्ट खोज खेतों की जुताई थी। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा के बाद कालीबंगा हड़प्पा संस्कृति का तीसरा सबसे बड़ा नगर साबित हुआ है। उसके टीलों के उत्खनन द्वारा कई अवशेष मिले हैं जैसे तांबे के औजार और मूर्तियाँ जो यह प्रकट करती हैं कि उस समय मानव प्रस्तर युग से ताम्रयुग में प्रवेश कर चुका था। कालीबंगा से सिंधु घाटी सभ्यता की मिट्टी पर बनी मुहरें मिली हैं, जिन पर पशुओं के चित्र एवं लेख अंकित हैं। अवशेषों में बर्तन भी हैं जिन पर चित्रांकन भी किया हुआ है।

कालीबंगा में सूर्य से तपी हुई ईंटों से बने मकान, दरवाजे चौड़ी सड़कें, कुएं, नालियाँ आदि पूर्व योजना के अनुसार निर्मित हैं जो तत्कालीन मानव की नगर-नियोजन, सफाई -व्यवस्था, पेयजल व्यवस्था आदि पर प्रकाश डालते हैं।

कालीबंगा (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

धोलावीरा

गुजरात राज्य में तालुका भचाऊ, जिला कच्छ के धोलावीरा गाँव के पास यह स्थल, लगभग 4500 साल पहले एक प्राचीन महानगर था। यह पांच सबसे बड़े हड़प्पा शहरों में से एक है और भारत के सबसे महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थलों में आता है जो सिंधु घाटी सभ्यता से संबंधित हैं। इस स्थल में उत्खनन के पश्चात् सिंधु सभ्यता के संबंध में कई बातें पहली बार सामने आईं। यह प्राचीन शहर अपने उत्तम नियोजन, स्मारकीय संरचनाओं, सौंदर्य, वास्तुकला, अद्भुत जल संचय प्रणाली के लिए उल्लेखनीय था। धोलीवीरा का 100 हेक्टेयर क्षेत्र में विस्तार था। इस प्राचीन नगर में पानी की जो व्यवस्था की गई थी वह अद्भुत है। धोलावीरा का कुछ भाग मजबूत पत्थरों की सुरक्षित दीवारों से बना हुआ है। अन्य भागों का निर्माण कच्ची पक्की ईटों से हुआ है। धोलावीरा का निर्माण चौकोर और आयताकार पत्थरों से हुआ है जो समीप स्थित खदानों से मिलता था। इस महानगर में अंतिम संस्कार की अलग-अलग व्यवस्थाएं थीं।

यहाँ स्थित किले के एक महाद्वार पर उस जमाने का साईनबोर्ड पाया गया है, जिस पर दस बड़े -बड़े अक्षरों में कुछ लिखा हुआ है, जो पांच हजार साल के बाद आज भी सुरक्षित है। इस प्रकार धोलावीरा के उत्खनन से प्राप्त जानकारी एवं पुरावशेषों ने सिंधु सभ्यता में नए आयाम जोड़े हैं।

धोलावीरा (कार्टो-१)

यूनेस्को

विश्व धरोहर स्थल

जंतर-मंतर

जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह द्वारा 1734 ई. में निर्मित यह खगोलीय वेधशाला संसद मार्ग पर स्थित है। भारत के सबसे प्राचीन वेधशाला को सवाई जय सिंह ने प्राचीन खगोलीय यंत्रों और जटिल गणितीय संरचनाओं के माध्यम से ज्योतिषीय और खगोलीय घटनाओं का विश्लेषण और सटीक भविष्यवाणी करने के लिए करवाया था। दुनियाभर में मशहूर इस अप्रतिम वेधशाला का निर्माण 1728 ई. में शुरू हुआ था जो 1734 ई. में पूरा हुआ था।

सवाई जयसिंह एक बहादुर योद्धा और मुगल सेनापति ही नहीं, उच्च कोटि के खगोल वैज्ञानिक भी थे। सवाई जयसिंह ने इस वेधशाला के निर्माण से पहले विश्व के कई देशों में अपने सांस्कृतिक दूत भेजकर वहां से खगोल विज्ञान के प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रंथों की पांडुलिपियां मंगवाई थीं और उन्हें अपने पोथीखाने (पुस्तकालय) में संरक्षित कर अपने अध्ययन के लिए उनका अनुवाद भी करवाया था। जयसिंह ने मथुरा, उज्जैन, दिल्ली, वाराणसी में भी वेधशाला का निर्माण करवाया था किंतु जयपुर की वेधशाला बाकी के जंतर-मंतरों से आकार में विशाल होने के साथ-साथ शिल्प और यंत्रों की दृष्टि से भी अद्‌वितीय है।

इन्हीं यंत्रों की गणना के आधार पर आज भी जयपुर के स्थानीय पंचांग का प्रकाशन होता है। यूनेस्को द्‌वारा जयपुर के जंतर-मंतर को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया है।

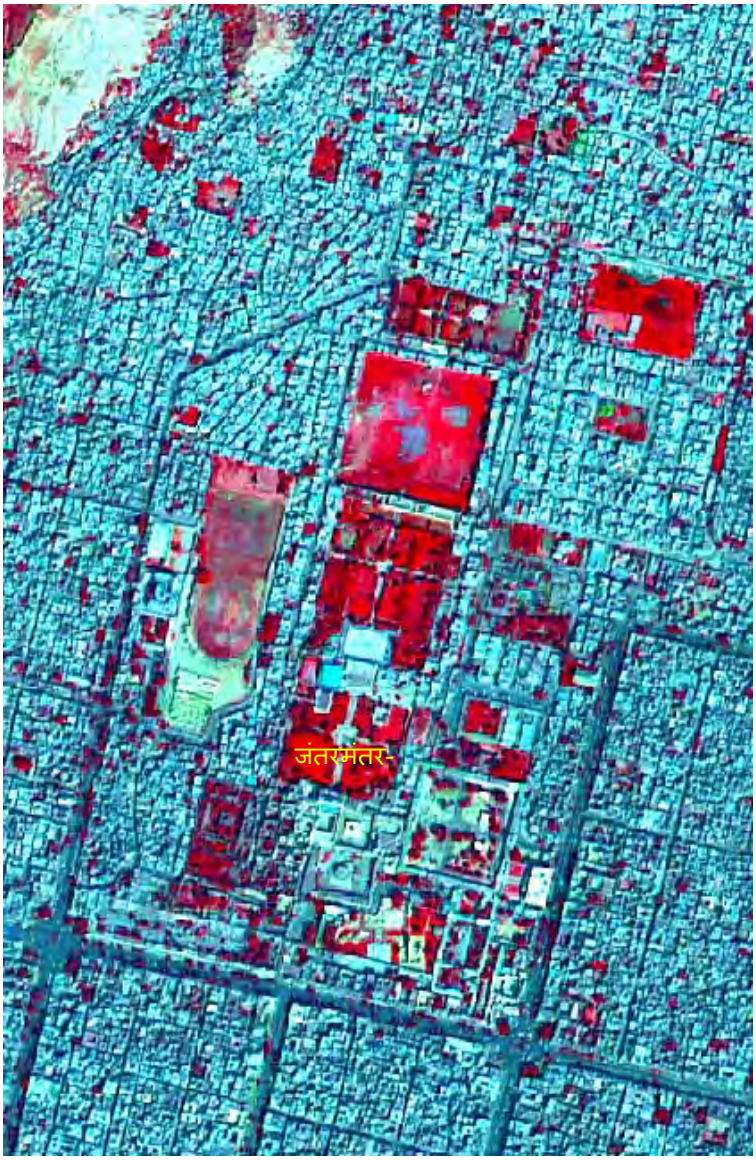

जंतरमंतर- (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

चंपानेर -पावागढ़ पुरातत्त्व उद्यान

चंपानेर गुजरात राज्य के शहर बड़ौदरा से लगभग 50 कि.मी. की दूरी पर है और पावागढ़ नामक प्रसिद्ध पहाड़ी की तलहटी पर स्थित है। पावागढ़ पहाड़ी लाल-पीले पत्थरों से गठित है और भारत की सबसे पुराने पत्थरों (चट्टानों) की संरचनाओं में से एक है। पावागढ़ में स्थित किला प्रसिद्ध सोलंकी राजाओं के नियंत्रण में था जो बाद में खिची चौहानों के हाथों में चला गया। सन् 1484 में सुलतान महमूद बेगदा ने इस किले को अपने कब्जे में कर लिया और उसका नाम मोहम्मदाबाद रख दिया। यह स्मारक मौलया पठार में स्थित है जो पहाड़ी पर है। पावागढ़ शिखर लगभग ढ़ाई हजार फुट ऊँचा है।

इस पर्वत के ऊपर महाबली-माता का मंदिर है। पावागढ़ हिंदू और जैन तीर्थों का संगम है। यहाँ अनके दर्शनीय मस्जिदें भी हैं। चंपानेर में ऐतिहासिक स्मारकों की श्रृखंला है, उनमें से कुछ पहाड़ी पर और बाकी मैदानों में स्थित हैं। यहाँ प्रसिद्ध जामा मस्जिद है जो हिंदू-मुस्लिम वास्तुकला का शानदार नमूना है। इन सांस्कृतिक धरोहरों में किले, धार्मिक इमारतें, आवासीय अहाते, कृषि जल आपूर्ति निर्माण कार्य आदि शामिल हैं। चंपानेर-पावागढ़ पुरातात्विक उद्यान को 2004 में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया।

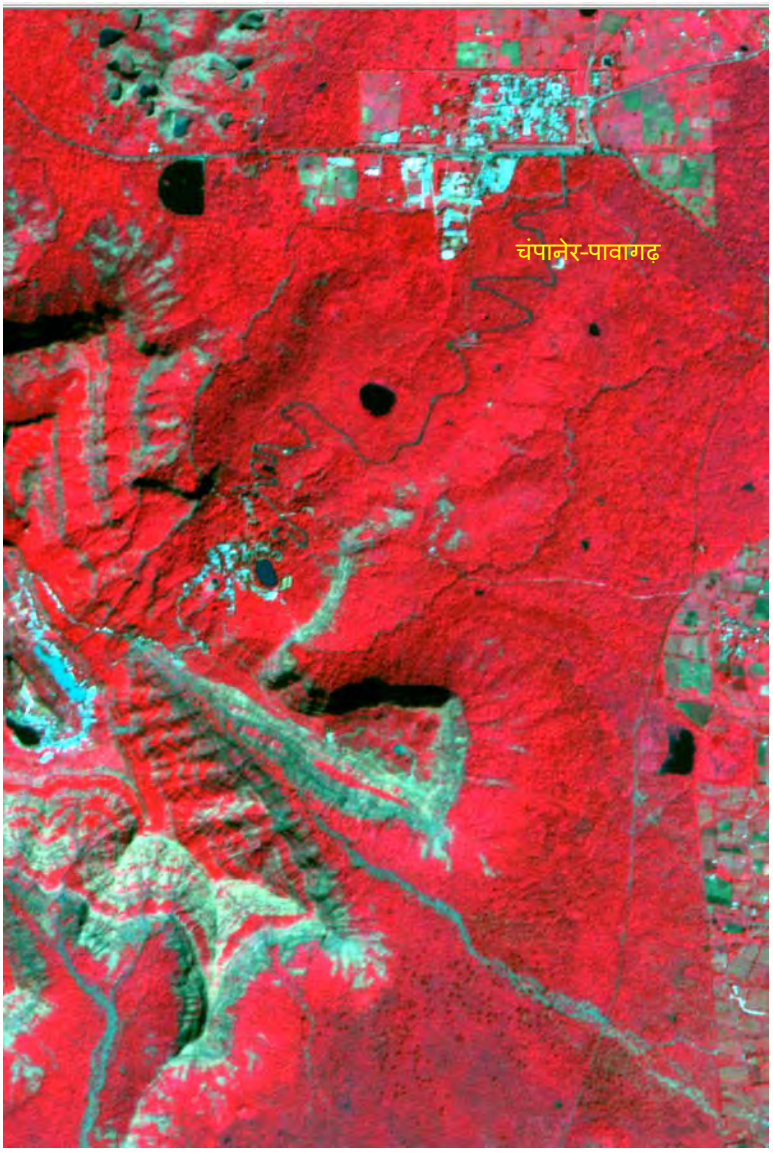

चंपानेर-पावागढ़ (रिसौर्ससेट लिस-४)

भीमबेटका शैलाश्रय

भीमबेटका शैलाश्रय भोपाल के दक्षिण पूर्व में होशंगाबाद मार्ग पर लगभग 45 कि.मी. दूरी पर स्थित है। यह स्थल लंबाई में 10 कि.मी. और चौड़ाई में लगभग 3 कि.मी है जिसमें 700 से अधिक शैलाश्रय हैं और इनमें से 400 से अधिक में चित्र हैं। पूर्व पुरापाषाण काल से मानव विकास की निरंतरता उत्तरवर्ती मध्य पुरापाषण काल में खुर्चनियों जैसे नए औजारों के अलावा छोटे आकार के पाषाण औजारों में देखी जा सकती है। भीमबेटका में मध्य-पाषाण युगीन संस्कृति लंबे समय तक जारी रही जैसा कि अन्यथा मध्य पाषाण काल संदर्भों में ताम्र प्रस्तर युगीन मृद्भांडों की उपस्थिति से पता चलता है।

भीमबेटका भारत के मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में स्थित एक पुरापाषाणिक आवासीय पुरास्थल है। यह आदि-मानव द्वारा बनाए गए शैल चित्रों और शैलाश्रयों के लिए प्रसिद्ध है। इन चित्रों को पुरापाषाणकाल से मध्य पाषाण काल के समय का माना जाता है। भीमबेटका के क्षेत्र को भारतीय पुरातत्त्व सर्वक्षेण भोपाल मंडल ने अगस्त 1990 में राष्ट्रीय महत्व का स्थल घोषित किया तथा जुलाई 2003 में यूनेस्को ने इसे विश्व धरोहर स्थल घोषित किया। यह भारत में मानव जीवन के प्राचीनतम चिह्न हैं। यह गुफाएं मध्य भारत के पठार के दक्षिणी किनारे पर स्थित विन्ध्याचल की पहाडियों के निचले छोर पर स्थित हैं। इन कृतियों में दैनिक जीवन की घटनाओं से लिए गए विषय चित्रित है। ये हजारों वर्षों पहले का जीवन दर्शाता है।

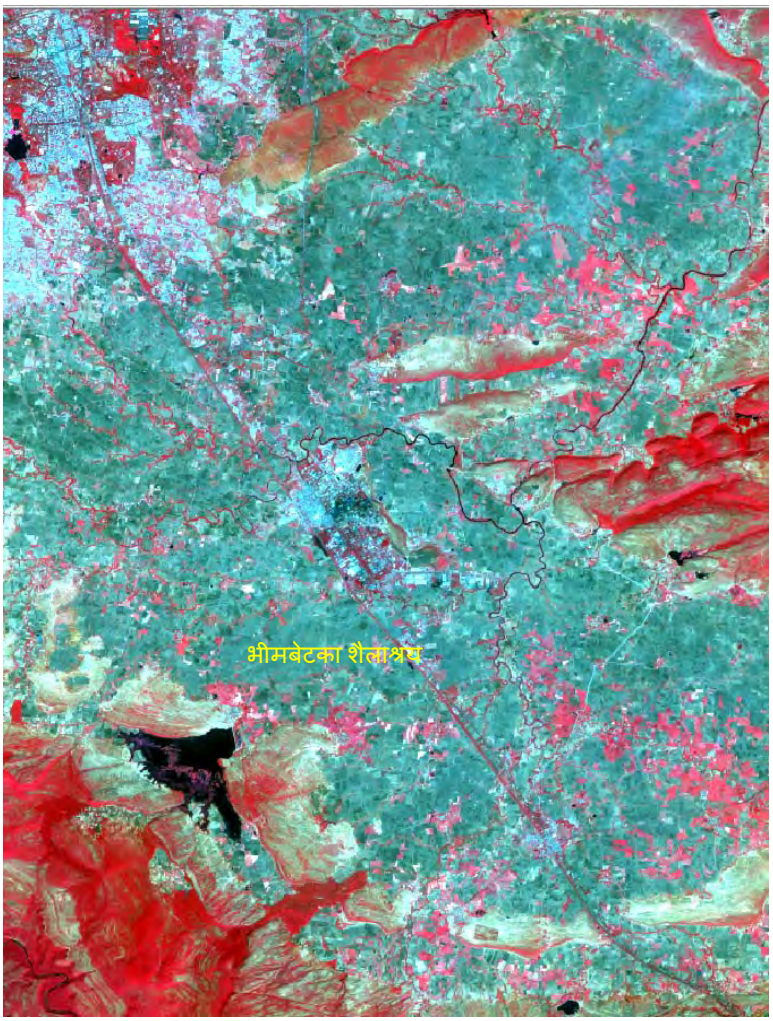

भीमबेटका शैलाश्रय (रिसौर्ससेट लिस-४)

गोवा के चर्च तथा मठ

गोवा के चर्च तथा मठों का निर्माण सोलहवीं से सत्रहवी शताब्दी में पुराने गोवा में हुआ जो पणजी के वेल्हा में है। इनमें भव्यतम और सबसे प्रसिद्ध हैं सेकैथड्रल, चेपल ऑफ बीम जीसस, चर्च ऑफ लेडी ऑफ रोजरी, चर्च ऑफ सेंट आगस्टाइन। सेकैथड्रल चर्च गोवा के प्राचीनतम चर्चों में से जाना जाता है। रोम के सेंट पीटर्स बैसिलिक के अनुरूप ही 1517 ई. में सेंट फ्रांसिस ऑफ आसीसी का निर्माण हुआ है। यह चर्च अपनी नक्काशी, अलंकरण, खुदाई की हुई काठ की नक्काशी, भित्तिचित्रों में अन्यतम और अप्रतिम है तथा दर्शकों एवं विश्व भर से आने वाले सैलानियों को अभिभूत कर देता है। बाम जीसस चर्च गोयिक भवन निर्माण शैली का सुंदर नमूना है।

इसके दो भाग हैं- पहली में सेंटजेवियर का शीशे का ताबूत है, दूसरे में सेंट जेवियर के जीवन संबंधी भित्तिचित्र हैं। चर्च के आंतरिक भागों की नक्काशी नयनाभिराम है। हर दसवें वर्ष सेंट जेवियर की मृतदेह को ताबूत से बाहर दर्शनों के लिए निकाला जाता है। 3 दिसंबर, 2004 ई. को दर्शनार्थ मृतदेह को निकाला गया था। अब यह अवसर 2014 ई. में होगा। गोवा के चर्चों एवं उनके ऐतिहासिक महत्व को देखते हुए इन्हें यूनेस्को की ओर से विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया है।

गोवा में और बहुत से स्मारक हैं जो या तो आंशिक रूप से या पूरी तरह से खंडहर हो चुके है किंतु उनका पुरातात्त्विक महत्व आज भी रूचिपूर्ण एवं उल्लेखनीय है।

गोवा के चर्च तथा मठ (रिसौर्ससेट लिस-४)

एलीफेंटा गुफाएं

एलीफेंटा की गुफाएं रायगढ़ जिले में मुंबई से लगभग 11 किलोमीटर दूर स्थित एक स्थल है। ये गुफाएं लगभग सात कि.मी. के क्षेत्र में फैली हैं। इस द्वीप का नाम विशालकाय हाथी के नाम पर पड़ा जो इस द्वीप में पाया गया था। इस हाथी को धारापुरी के नाम से जाना जाता है। वर्तमान में हाथी की मूर्ति को मुंबई में जीजामाता उद्यान में स्थापित किया गया है। इस द्वीप को विभिन्न राजवंशों जैसे कोकंण, मौर्य, बादामी के चालुक्यों शिलाहारों, राष्ट्रकूटों, कल्याणी चालुक्यों, देवगिरी के यादवों, अहमदाबाद के मुस्लिम शासकों और बाद में पुर्तगालियों द्वारा अपने आधिपत्य में रखा गया और उनके बाद यह द्वीप ब्रिटिश शासन के हाथों में चला गया।

एलीफेंटा समूह में सात गुफाओं की खुदाई की गई थी। उत्खनित गुफाओं में से गुफा संख्या एक सबसे अधिक महत्वपूर्ण है और यह विकसित बराहमणी शैलकृत वास्तुकला का प्रतिनिधित्व करती है। यह गुफा उत्कृष्ट और प्रभावशाली मूर्तिशिल्प के लिए भी प्रसिद्ध है। इस गुफा का मुख्य प्रवेश द्वार उत्तर की तरफ है और दो अन्य प्रवेश द्वार पूर्व और पश्चिम की ओर हैं तथा एक केंद्रीय हॉल है जिसमें स्तंभों की छह पंक्तियां हैं।

लिंगम वेदिका वाले पश्चिमी किनारे को छोड़कर, प्रत्येक पंक्ति में छह-छह स्तंभ हैं। यहाँ तीन वर्गाकार आले हैं जो भित्ति स्तंभों द्वारा विभक्त हैं। प्रत्येक आले में द्वारपाल की

विशाल आकृति है।

एलीफेंटा गुफाएं (रिसौर्ससेट लिस-४)

कोणार्क सूर्य मंदिर

उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर से 65 किलोमीटर दूर विश्वप्रसिद्ध यह स्थान सूर्यमंदिर के कारण जाना जाता है। उड़ीसा के गंगवंश के राजा नरसिंह देव कलाप्रेमी थे, उन्होंने ही देश को उस समय की कलाशिल्प का बेहतरीन उदाहरण प्रदान किया था। इस खूबसूरत मंदिर का निर्माण उस काल के शिल्पकला के मर्मज्ञ शिल्पकारों की देखरेख में लगभग 12 वर्षों में किया गया था। ऐतिहासिक व पौराणिक दृष्टि से कोणार्क एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल है जहाँ कलाप्रेमियों के अतिरिक्त देशी विदेशी सैलानियों की भीड़ लगी रहती है।

सूर्य मंदिर उड़ीसा के बेजोड़ शिल्प का एक उत्कृष्ट नमूना है। यह मंदिर सूर्य के स्वरूप को साकार करता हुआ प्रतीत होता है। इस मंदिर का निर्माण सूर्य के काल्पनिक रथ के रूप में किया गया है। यह सूर्य मंदिर उड़ीसा के उत्कर्ष काल तथा कलिंग शैली की स्थापत्य कला का प्रतीक है। इसमें सूर्य अपने 24 पहाड़ियों और 7 घोड़ो के रथ पर सवार होकर दिन भर की यात्रा के लिए निकलता दिखाई देता है।

यह मंदिर यद्यपि अब काफी कुछ नष्ट हो चुका है फिर भी शेष बचा इस मंदिर का आकार प्रकार और पत्थरों पर तराशी गई अनेक प्रतिमाएं आज भी पर्यटकों को मंत्र मुग्ध कर देने की क्षमता रखती हैं।

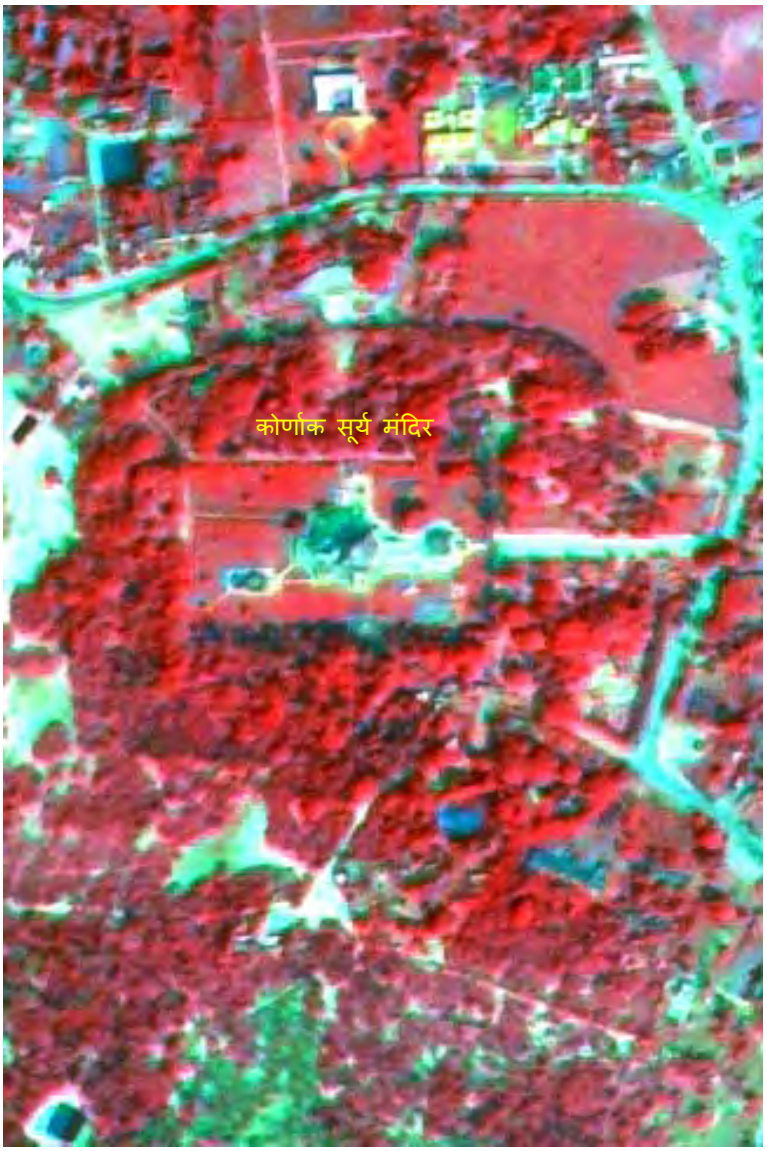

कोर्णाक सूर्य मंदिर (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-2 संमिश्रित)

एलोरा गुफाएं

एलोरा एक पुरातात्त्विक स्थल है जो औरंगाबाद जिला मुख्यालय से औरंगाबाद-चालीस गांव रोड़ पर 30 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। एलोरा गुफाएं बहुत प्रसिद्ध हैं क्योंकि यह सम्पूर्ण विश्व में सबसे बड़ी चट्टान को काट कर बनाए गए मठ-मंदिर परिसरों में से एक हैं। ये गुफाएं महाराष्ट्र के ज्वालामुखीय बेसाल्ट संरचनाओं से काटकर बनाई गई हैं जिन्हें दक्खन ट्रेप कहा जाता है। ट्रेप शब्द स्कैंडिनोवियार्ड मूल का है जो ज्वालामुखी निक्षेपों की सीढ़ीनुमा संरचना को दर्शाता है। नज़दीकी घृष्णेश्वर मंदिर के निर्माण में इस प्रकार की चट्टानों का इस्तेमाल हुआ था। जिन पहाड़ियों को काटकर यह गुफाएं बनाई गई है, वे दक्कन की सह्याद्रि पर्वतमाला का हिस्सा है। गुफा परिसर को काटने के लिए पश्चिमी भूतल का प्रयोग हुआ है।

यह क्षेत्र अपनी प्राचीनता के कारण भी प्रसिद्ध है। यह अति प्राचीन समय से ही आबाद हो गया था। पूर्व पुरापाषाण काल (लगभग 10,000 से 20,000 वर्ष पूर्व), मध्य पाषाण काल (10,000 वर्ष से कम अवधि) में काम आने वाले पत्थर के औज़ार इस तथ्य का प्रमाण देते हैं। कुल मिलाकर पहाड़ी क्षेत्र में लगभग 100 गुफाएं हैं जिनमें 34 गुफाएं सुप्रसिद्ध हैं। इन गुफाओं में से 1 से 12 गुफाएं बौद्ध धर्म से संबंधित हैं, 13 से 19 गुफाएं ब्राह्मणवाद से जुड़ी हैं तथा 30-34 गुफाएं जैन धर्म से संबंधित हैं।

अजन्ता से भिन्न इन गुफाओं की विशेषता यह है कि व्यापार मार्ग के अत्यंत निकट होने के कारण इनकी कभी भी उपेक्षा नहीं हुई। यूनेस्को के द्वारा इन गुफाओं को विश्व धरोहर स्थल का दर्जा दिया गया है।

एलोरा गुफाएं (रिसौर्ससेट लिस-४)

अजंता की गुफाएं

अजन्ता की गुफाएं महाराष्ट्र में औरंगाबाद से लगभग 104 किमी की दूरी पर एक सुंदर पहाड़ी के बीच में हैं। इस पहाड़ी की आकृति अर्द्ध चन्द्राकार-सी लगती है। अजन्ता की गुफाओं का मुख पूर्व की ओर है जिससे सूर्य का प्रकाश सीधे इनके अन्दर प्रवेश करता है। ये गिनती में 27 हैं जिनमें कुछ तो पच्चीस मीटर लम्बी और तेरह मीटर चौड़ी हैं। इन गुफाओं के बारे में सबसे बड़ा आश्चर्य यह है कि ये गुफाएं केवल छैनी और हथौड़ी की सहायता से चट्टानों को काट-काटकर बनाई गई हैं। अजन्ता की गुफाओं के दरवाजों के पत्थरों पर नक्काशी का सुंदर काम है, परन्तु इनका प्रमुख आकर्षण यहाँ की दीवारों पर बने रंगीन चित्रों में है।

उस समय दीवारों पर रंगीन चित्र बनाने का ढंग भी अनोखा था। दीवार पर पहले एक विशेष प्रकार की मिट्टी का लेप करने के बाद चित्रकार चित्र बनाते थे और उसमें विभिन्न रंग भरते थे। ये सभी चित्र गौतम बुद्ध और उनके पूर्व जन्म संबंधी हैं जो अपने-अपने समय की कथा बताते हैं। इन कथाओं को जातक कथाएं कहते हैं जिससे हमें उस समय के रहन-सहन, वेश-भूषा आदि का पता चलता है। वस्तुतः अजन्ता की गुफाओं की कल्पना चैत्यों और विहारों के रूप में की गई है। बौद्ध धर्म का प्रचार करने वालों में सिर्फ राजा-महाराजा ही नहीं अपितु हजारों भिक्षु और भिक्षुणियां भी थे।

इनके रहने के लिए स्थान-स्थान पर विहार बनाये गये थे। हर एक विहार के पास ही एक मंदिर भी होता था जिसे 'चैत्य' कहते हैं।

अजंता (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

मंदिर

कांचीपुरम

कांचीपुरम तमिलनाडु के चेन्नई शहर से 71 किमी की दूरी पर है जो कई शताब्दियों तक पल्लवकालीन राजधानी के रूप में गौरवशाली रही है। काशी और कांचीपुरम दोनों ही भगवान शंकर की प्रिय नगरी है। अतएव कांची को दक्षिण भारत में वही स्थान प्राप्त है जो उत्तर भारत में काशी को है। महाभारत में कांची का नाम कांजीवरम मिलता है। महात्मा बुद्ध ने भी कांची में निवास किया था। ऐसा कहा जाता है कि जगद्गुरु शंकराचार्य की यहां पर बैठक लगती थी जहाँ पर आजकल उनकी चरण पादुकाएं रखी हुई हैं। इस नगरी का नाम किसी समय कांचपुर (कनकपुरी) भी था जो कालान्तर में कांचीपुरम हो गया। कांची के दो भाग हैं, एक शिव कांची और दूसरा विष्णुकांची जिनके बीच की दूरी चार किलोमीटर है। शिव कांची का कामाक्षी मन्दिर बड़ा विशाल है जिसे कामकोटि भी कहते हैं। यह मन्दिर कांची के ठीक मध्य में है और कामकोटि पीठ भी यहीं हैं। रथयात्रा उत्सव पर सभी रथ इसी पीठ की प्रदक्षिणा करते हैं। कांची के अन्य मंदिरों में एकामेश्वर, कैलाशनाथ, बैकुण्ठनाथ पेरूमल, विश्वेश्वर, वरदराज स्वामी, चन्द्रप्रभा और व्रतमान मुख्य हैं। इनमें एकामेश्वर मन्दिर सबसे प्रसिद्ध है जिसका निर्माण सोलहवीं शताब्दी में विजयनगर के राजा कृष्णदेवराय ने करवाया है। इसका गोपुरम दसमंजिला है और ऊँचाई सत्तावन मीटर है। तिरुवन्नमलाई मंदि के गोपुर के पश्चात सम्भवतः यही भारत का सबसे ऊँचा गोपुर है।

कांचीपुरम अपनी हथकरघा की सूती व रेशमी साड़ियों के लिये भी देश भर में प्रसिद्ध है।

कांची मंदिर नगर (कार्टो-१)

मदुरई

तमिलनाडु राज्य में वेगा नदी के दाहिने तट पर बसा शहर मदुरई एक पवित्र नगर है, जो पांड्य राजाओं की राजधानी रह चुका है। ढाई हजार वर्ष से भी अधिक प्राचीन इस नगर का नाम संस्कृत भाषा के ग्रंथों में 'मधुरा' लिखा हुआ मिलता है। इसे 'दक्षिणमथुरा' भी कहा जाता है। शताब्दियों से तमिलसाहित्य और संस्कृति का केन्द्र रहे मदुरई को दक्षिण का काशी भी कहते हैं। इस नगर का मुख्य आकर्षण 'मीनाक्षी-सुंदरेश्वर मंदिर' है। यह मंदिर द्रविड़ वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण है। आयताकार क्षेत्र में बना यह मंदिर यहाँ का प्रसिद्ध तीर्थस्थल है।

मंदिर में कुल ग्यारह गोपुरम हैं, जिन पर देवी-देवताओं और जीव-जंतुओं की अत्यधिक बहुरंगी आकृतियां बनी हैं। इनमें दक्षिण दिशा का गोपुरम सबसे विशाल है जिसकी ऊँचाई 160 फुट है। यह मंदिर अपने हजार स्तम्भों वाले अद्भुत संग्रहालय के लिये प्रसिद्ध है। उत्तर दिशा के गोपुरम के नीचे पत्थर के पतले 22 खंभे हैं, जो ग्रेनाइट पत्थर के एक ही खंड से काटकर बनाये गये हैं। इनको हाथ से थपथपाने या छोटे कंकड़ से बजाने पर संगीत की मधुर ध्वनियाँ निकलती हैं। ऐसा कहा जाता है कि ये ध्वनियां शास्त्रीय संगीत के रागों पर आधारित हैं।

इन स्तम्भों को संगीत स्तंभ कहते हैं। यहाँ शिल्प की दृष्टि से अद्भुत सिंहमूर्ति है। सिंह के मुँह में गोला है, जबड़े से अंगुली डालकर हिलाने से वह गोला घूमता है।

मदुरई (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

भुवनेश्वर

भुवनेश्वर उड़ीसा राज्य की राजधानी है तथा मंदिरों के नगर के नाम से भी जाना जाता है। भुवनेश्वर लिंगराज-मंदिर के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। यहाँ बिंदुसागर-सरोवर है तथा पास ही लिंगराज का विशालकाय मंदिर है। प्राचीनकाल में यह नगर कलिंग और उत्कल के नाम से भी जाना जाता था। सैंकड़ों वर्षों से भुवनेश्वर पूर्वोत्तर भारत में शैवसंप्रदाय का मुख्य केन्द्र रहा है। ऐसा कहा जाता है कि मध्ययुग में यहाँ सात हजार से अधिक मंदिर एवं पूजास्थल थे, जिनमें से अब करीब पांच सौ शेष बचे हैं। भुवनेश्वर में लिंगराज का विशाल मंदिर अपनी अनुपम स्थापत्यकला के लिए भी प्रसिद्ध है। लिंगराज मंदिर समूह में बिंदुसरोवर तथा अनंत वासुदेव पूजा स्थल हैं, जिनका निर्माणकाल नौवीं से दसवीं सदी का रहा है। यहाँ से पूर्व की ओर ब्रह्मेश्वर, भास्करेश्वर समुदाय के मंदिर हैं। यहीं राजा-रानी का सुप्रसिद्ध कलात्मक मंदिर है, जिसका निर्माण संभवतः सातवीं सदी में हुआ था। इसके आसपास ही मंदिरों का सिद्धारण्य क्षेत्र है, जिसमें मुक्तेश्वर, केदारेश्वर, सिद्धेश्वर तथा परशुरामेश्वर के प्राचीन शिवालय स्थित हैं। इसमें परशुरामेश्वर मंदिर सबसे प्राचीन माना जाता है। ये मंदिर कलिंग और द्रविड़ स्थापत्यकला के बेजोड़ नमूने हैं।

भुवनेश्वर के प्राचीन मंदिरों के समूह में बैताल मंदिर का विशेष स्थान है। यहां सूर्य उपासना स्थल है, जहां सूर्य-रथ के साथ उषा, अरूण और संध्या की प्रतिमाएं हैं।

बिंदु सागर
लिंगराज मंदिर

भुवनेश्वर (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

राजरानी मंदिर

खजुराहो

खजुराहो मध्य प्रदेश का एक दूरस्थ एवं बीहड़ स्थान है। खजुराहो मन्दिर समूह का निर्माण चन्देल शासन काल में हुआ था। चन्देल एक राजवंश था जिसने मुगल आक्रमण से पूर्व भारत में 5 शताब्दियों तक शासन किया था। खजुराहो के सभी मन्दिर एक साथ 950 ई. से 1050 ई. के मध्य निर्मित हुए हैं। खजुराहो के मन्दिरों की अद्भुत सुंदरता, आकार और स्थापत्य कला को देखकर आश्चर्य होता है कि ये मन्दिर इस निर्जन स्थान पर क्यों बनवाये गये।

यह स्थान आज भी निर्जन है, यहाँ जनसंख्या बहुत कम है, यह स्थान मध्य प्रदेश के प्रत्येक मुख्य केन्द्र से अत्यन्त दूर है तथा अभी भी वहाँ गर्मियों के दिनों में असहनीय गर्मी, सूखा, धूल और अन्य कष्टों का सामना करना पड़ता है। इन समस्त मन्दिरों का निर्माण मात्र 100 वर्षों में कर लिया गया। निःसंदेह यह आश्चर्य की बात है कि चन्देल शासकों ने इतने दूरस्थ स्थानों पर तथा पारम्परिक शैली से पृथक हिन्दू मंदिरों का निर्माण कराया। खजुराहों के मंदिर इंडो-आर्यन वास्तुकला के सर्वोत्कृष्ट उदाहरण हैं। मन्दिरों के चारों ओर अनेक प्रकार से तराशे गये पत्थरों के समूह, बन्ध के रूप में हैं।

मन्दिरों की दीवारों, और धरातल पर बनाये गये चित्रों के माध्यम से तत्कालीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति का सजीव चित्रण किया गया है। जैसे देवी-देवताओं, नृत्यकारों एवं संगीतकारों तथा वास्तविक एवं काल्पनिक पशुओं के चित्र आदि।

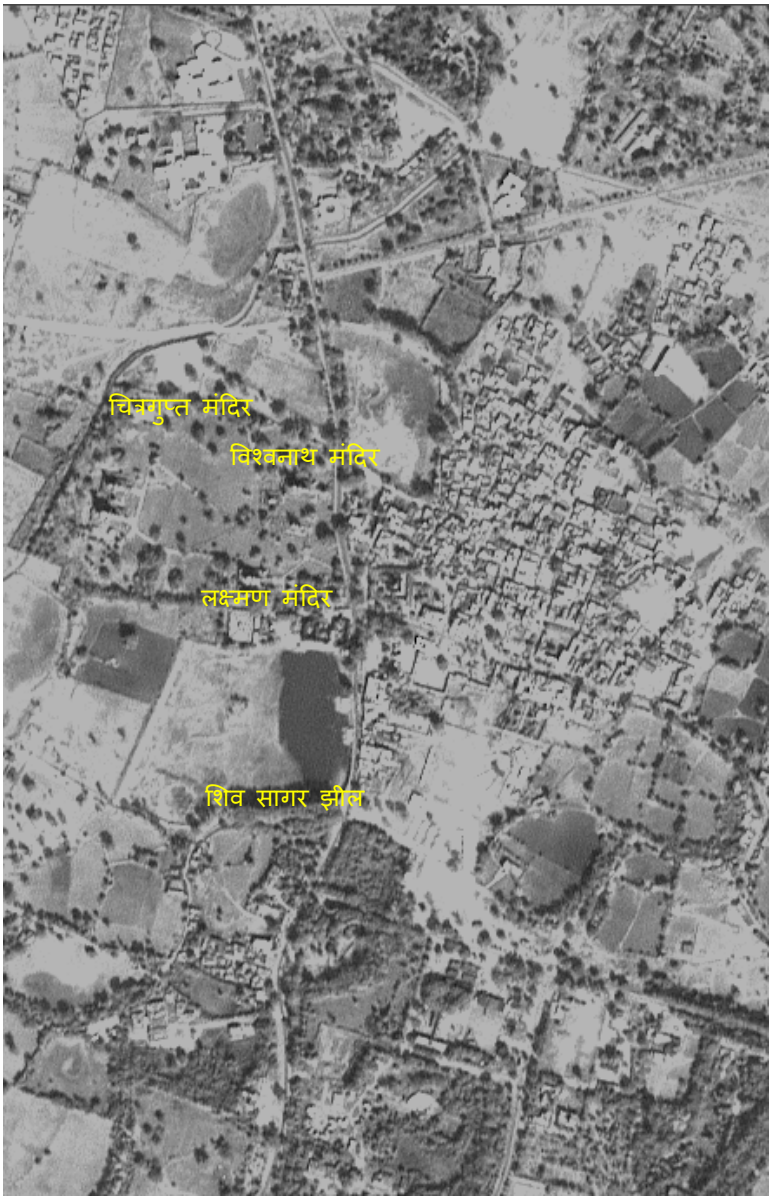

खजुराहो (कार्टो-१)

हलेबीडु

हलेबीडु, कर्नाटक राज्य के हसन जिले में स्थित है। प्राचीनकाल में हलेबीडु द्वारसमुद्र के नाम से भी जाना जाता था। यह अपने मंदिरों एवं उनकी शिल्पकला के लिए प्रसिद्ध है। यह जगह बहुत समय तक होयसला वंश की राजधानी रही, इसलिए यहाँ के मंदिर जैसे केदारेश्वर एवं होयसालेश्वर होयसला स्थापत्य कला का उदाहरण पेश करते हैं। हलेबीडु का अर्थ है ध्वस्त शहर । यह स्थान इसरो के हासन स्थित मुख्य नियंत्रण सुविधा से लगभग 24 किमी दूरी पर स्थित है।

इस शहर को बहमनी शासकों द्वारा दो बार नष्ट किया गया था। होयसला वंश के शासक कला के संरक्षक थे। हलेबीडु को होयसला वंश के शासन काल में बने मंदिरों के कारण ही इतनी प्रसिद्धि मिली। होयसला वंश के शासकों ने हलेबीडु में भव्य मंदिरों का निर्माण करवाया जो आज भी उतनी ही शान और भव्यता से खड़े हैं। मंदिर परिसर में दो हिन्दू मंदिर होयसालेश्वर एवं केदारेश्वर हैं इन दोनों मंदिरों के सामने बड़ी झील है।

इन मंदिरों के निकट ही इसी शैली में और तीन भव्य जैन मंदिर बने हुए हैं। इन मंदिरों को यूनेस्को विश्व विरासत स्थल के रूप में प्रस्तावित किया जा रहा है।

हलेबीडु (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

मार्तंड

मार्तंड सूर्य मंदिर जम्मू और कश्मीर राज्य में अनंतनाग शहर के पास एक पठार के शीर्ष पर स्थित है। यह मंदिर देश के महत्वपूर्ण पुरातात्त्विक स्थलों में से एक है। यह भास्कर यानी सूर्य देवता को समर्पित एक मध्ययुगीन मंदिर है। मार्तंड के सूर्य मंदिर की वास्तुकला शैली को दुनिया की दुर्लभ श्रेणियों में गिना जाता है। उत्तम वास्तुकला के साथ-साथ यहाँ का एक मुख्य सुरम्य वातावरण भी है।

यह मंदिर कश्मीर घाटी का मनोरम दृश्य भी प्रदान करता है। मार्तंड संस्कृत में हिंदू सूर्य देवता के लिए दूसरा नाम है। मार्तंड सूर्य मंदिर को करकोटा राजवंश के राजा ललितादित्य द्वारा लगभग 725-756 ई. के दौरान निर्मित करवाया गया था। इस मंदिर का निर्माण राजा ललितादित्य के सबसे अच्छे एवं यादगार कार्यों में से एक है। पुरातत्त्व निष्कर्ष से ऐसा कह सकते हैं कि इसकी वास्तुकला कश्मीर शैली की है।

यह मंदिर अपनी सुंदरता एवं वास्तुकला के लिए तो प्रसिद्ध है ही लेकिन साथ-साथ यह प्राचीन हिन्दुओं की अद्‌वितीय इमारत कौशल का उदाहरण भी है।

मार्तंड (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

श्रीरंगम्

श्रीरंगम् दक्षिण भारत के तिरूचिरापल्ली शहर का एक क्षेत्र और द्वीप है। यह एक तरफ कावेरी नदी से और दूसरी तरफ कावेरी शाखा कोलिदम से घिरा हुआ है। यह वैष्णवों की एक व्यापक आबादी का निवास स्थान है। श्रीरंगम अपने श्रीरंगनाथस्वामी मंदिर के लिए प्रसिद्ध है जो हिंदुओं का एक प्रमुख तीर्थयात्रा गंतव्य और भारत के सबसे बड़े मंदिर परिसरों में से एक है। श्रीरंगम भगवान विष्णु के आठ अति स्वयंवक्ता क्षेत्रों में से एक सबसे महत्वपूर्ण है। यह 108 मुख्य विष्णु मंदिरों (दिव्यासनों) में से सबसे पहला तथा अति महत्वपूर्ण माना जाता है।

मंदिर का गठन सात उन्नत घेरों से हुआ है जिसका गोपुरम अक्षीय पथ से जुड़ा हुआ है जो सबसे बाहरी घेरे की तरफ सबसे ऊँचा और एकदम अंदर की तरफ सबसे नीचा है।

इस मंदिर का परिसर 7 सकेंद्रित दीवारी अनुभागों और 21 गोपुरम से बना है। मंदिर के गोपुरम को राजागोपुरम कहा जाता है और यह 72 मी. ऊंचा है, जो एशिया में सबसे लंबा है। इस मंदिर को तिरुवरंगा तिरूपति, पेरियाकोयल, भूलोक वैकुण्ठम् भोगमंडपम् नामों से भी जाना जाता है।

श्रीरंगम (रिसौर्ससेट लिस-४)

हम्पी

हम्पी मध्यकालीन हिंदू राज्य विजयनगर साम्राज्य की राजधानी था। तुंगभद्रा नदी के तट पर स्थित यह नगर बैंगलोर से लगभग 353 किमी दूर है। यहाँ पर महादेव शिवशंकर का अति प्राचीन मन्दिर है जो पंपापति या विरूपाक्ष के नाम से सुप्रसिद्ध है। स्थानीय लोग इन्हें हम्पीश्वर कहते हैं। यह विजयनगर की प्राचीन राजधानी का नाम है। इसे भारत के बारह धर्म क्षेत्रों में से एक होने का गौरव प्राप्त है। तेरहवीं सदी में हरिहर और बुक्का नामक दो बहादुर भाइयों के द्वारा स्थापित विजयनगर का विस्तार चौदहवीं सदी में प्रतापी सम्राट कृष्णदेव राय के द्वारा किया गया। कृष्णदेवराय ने ही यहाँ के दूसरे सुविख्यात मंदिर विट्ठलदेव का निर्माण आरंभ कराया था। विट्ठलमंदिर में विष्णु भगवान की प्रतिमा सुशोभित है। पंद्रहवीं सदी में निर्मित यह मंदिर 'यूनेस्को' द्वारा विश्व सांस्कृतिक धरोहर घोषित किया जा चुका है। चौकोर आसन पर निर्मित मुख्य मंदिर चारों ओर से पत्थर के ऊंचे प्राचीर से घिरा है। इसके मंडप में छप्पन सुंदर स्तम्भ हैं, जिनसे अलग प्रकार की ध्वनि निकलती है। निकट में हेमकूट पहाड़ी पर गणेशमूर्ति तथा जैन मन्दिर हैं। एक ही पत्थर से निर्मित गणेशजी की इतनी बड़ी मूर्ति अन्य कहीं नहीं हैं। हम्पी क्षेत्र को ही रामायण में वर्णित किष्किंधा क्षेत्र माना जाता है। करीब दो किमी पर पंपा सरोवर है, उसके पास अंजनी पहाड़ी को ही श्रीहनुमान का जन्म स्थान माना जाता है। यहां भगवान नरसिंह का भी

एक भव्य मंदिर है।

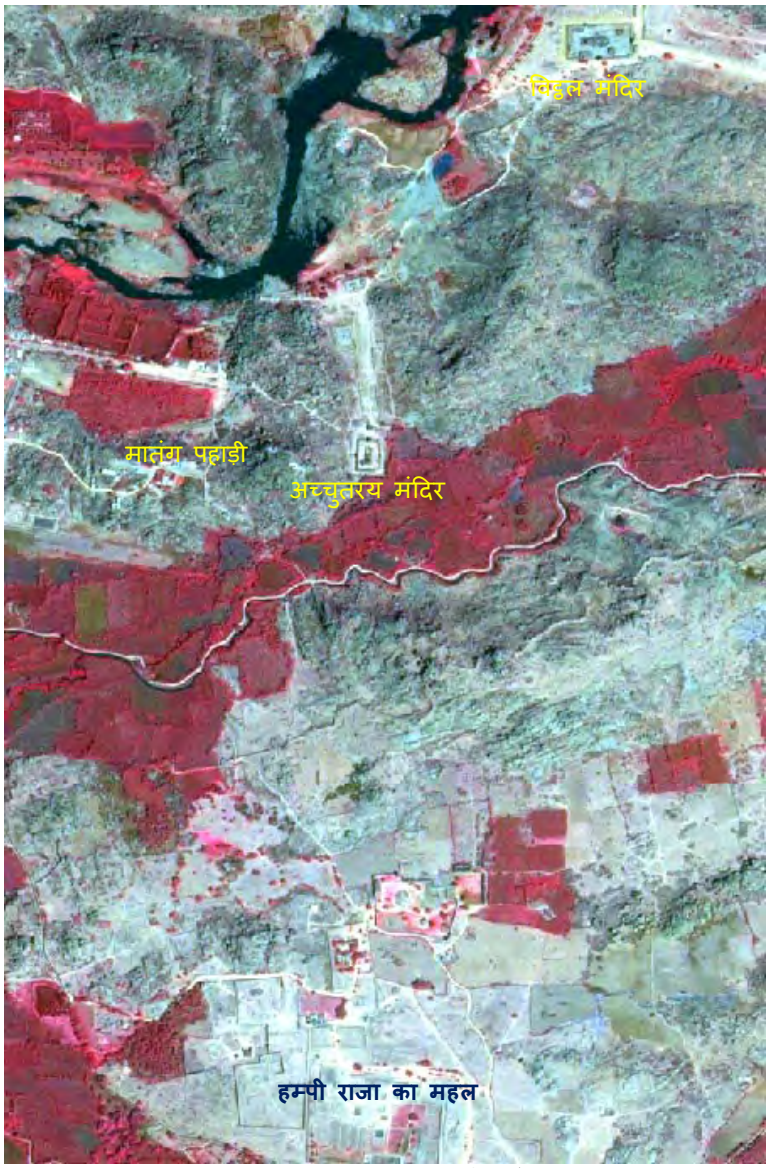

हम्पी (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

गिरनार

गिरनार पवित्र पर्वत गुजरात राज्य के जूनागढ़ जिले में स्थित है। इसे प्राचीनकाल में रैवतगिरी, उज्जयन्त के नाम से जाना जाता था। सौराष्ट्र के इस क्षेत्र में पांच पर्वत शिखरों पर सनातन धर्म के प्राचीन देवालय स्थित हैं। यहीं जैन संप्रदाय के बाईसवें तीर्थंकर नेमिनाथजी का निर्वाण हुआ था, जिनके चरण-चिह्न पर्वत शिखर पर अंकित हैं। करीब 3500 फुट ऊंची गिरनार पर्वत श्रृंखला में 21 से अधिक शिखर है। इनमें से पांच विशेष रूप से पूज्य हैं जो अंबामाता, गोरखनाथ, औधड़ शिखर, गुरुदत्तात्रेय और कालिका देवी के नाम से प्रसिद्ध है। इस पहाड़ी इलाके की सबसे ऊंची चोटी गोरखनाथ है। इस इलाके में सम्राट अशोक के शिलालेख भी हैं।

मंदिरों के अलावा इस पहाड़ी क्षेत्र में तीन कुंड भी हैं, जिनमें प्राकृतिक स्रोतों से जल आता है। गौमुखी, हनुमानधारा तथा कमंडलकुंड के नाम से विख्यात यहां के सरोवरों में स्नान का अपना धार्मिक महत्व है। गिरनार क्षेत्र में लोग अंबादेवी को अधिक महत्व देते हैं। अंबादेवी का मंदिर शक्तिपीठ के रूप में प्रसिद्ध है।

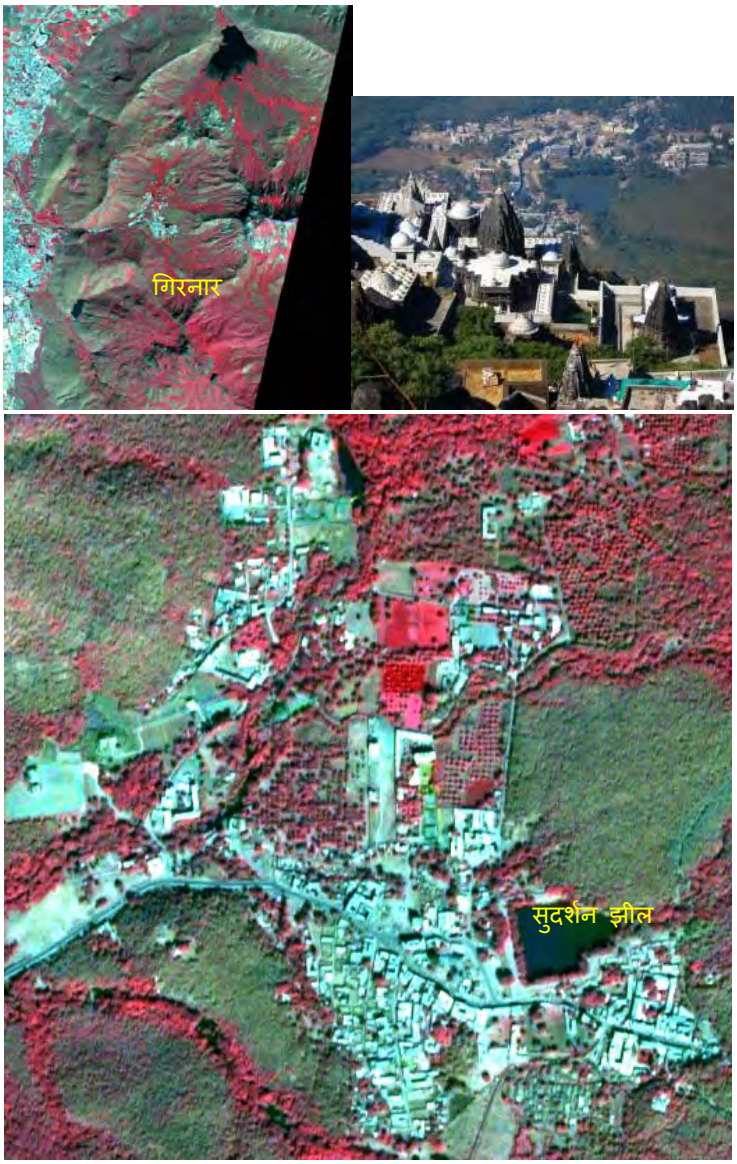

गिरनार (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

अवंतिपुर

अवंतिपुर श्रीनगर के दक्षिण-पूर्व में 28 कि.मी. दूर अनन्तनाग जिले में झेलम नदी के किनारे स्थित है। इस नगर की स्थापना का श्रेय उत्पल वंश के पहले राजा अवंतिवर्मन (855-883 ई.) को दिया जाता है। अवंतिपुर में स्वयं अंवतिवर्मन ने दो भव्य मंदिरों की स्थापना की थी। एक भगवान विष्णु का मंदिर है जिसे अवंतिस्वामी मंदिर कहते हैं। मध्यकाल में ये मंदिर ध्वस्त होकर खंडहरों में बदल गये थे।

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में उत्खनन के द्वारा आंगन के फर्श से नीचे की ओर मंदिर के समस्त प्रांगण को उजागर किया गया और मध्य मंदिर के वर्तमान तहखाने और सहायक मंदिरों के अवशेष प्राप्त किए। मुख्य परिसर के विन्यास में एक बड़े आयताकार आंगन के मध्य भाग में बनाया गया एक मंदिर, मुख्य मंदिर के चारों कोनों पर छोटे मंदिर, आंगन की परिधि के चारों ओर व्यवस्थित कोठरियों सहित क्रमिक छतदार परिस्तम्भ और शानदार दरवाजा शामिल है। इस मंदिर पर पर्याप्त प्रभावशाली उत्कीर्णन हुआ है और उत्कृष्ट भव्य मूर्तियाँ बनी हुई हैं जो वास्तुशिल्प और कला का अनूठा संगम है।

अवन्तिपुर (कार्टो-१)

दारासुरम

दारासुरम दक्षिणी भारत के तमिलनाडु राज्य के कुंभाकोणम् शहर के निकट एक छोटा नगर है। यह ऐरावतेश्वर मंदिर के लिये विख्यात है जिसका निर्माण राजराजा चोला द्वितीय ने करवाया था। यह मंदिर इस प्रकार से बना है कि ऐसा प्रतीत होता है संपूर्ण मंदिर एक रथ के समान है जो झील में तैरते कमल के ऊपर बना है। यह मंदिर एक यूनेस्को विश्व धरोहर है। यह मंदिर स्थापत्यकला का खजाना है। मंदिर के प्रवेश द्वार पर दो द्वारपालक हैं : शरवनिधि तथा पद्मनिधि। अनगिनत नक्काशियां ना तो सिर्फ देवी-देवताओं और उनकी कहानियाँ दर्शाती हैं अपितु उस समय के दैनिक जीवन को भी दर्शाती हैं।

मंदिर के समक्ष एक छोटा मंडप है जहाँ तीन चरणों की सीढ़ियों द्वारा पहुँचा जा सकता है। ये चरण पत्थरों द्वारा निर्मित हैं जिनको थपथपाने से विभिन्न संगीतमय ध्वनियां उत्पन्न होती हैं एवं विभिन्न स्थलों पर सभी सातों स्वरों को सुना जा सकता है।

दारासुरम मंदिर नगर (कार्टो-१)

सोमनाथपुर

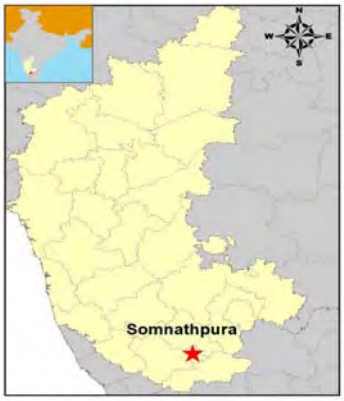

सोमनाथपुर कर्नाटक राज्य के मैसूर जिले में स्थित एक छोटा कस्बा है। सोमनाथपुर का केशव मन्दिर कर्नाटक के प्रसिद्ध होयसाल मंदिरों में से एक है। यह मन्दिर होयसाल स्थापत्य का अद्भुत उदाहरण है एवं अच्छी स्थिति एवं संरक्षण में है। इसका निर्माण 1268 ए.डी. में हुआ था। ऐसा माना जाता है कि इस मंदिर का निर्माण सोमनाथ के संरक्षण में हुआ था जो नरसिंह तृतीय की सेना में जनरल था। सोमनाथपुर कावेरी नदी के तट पर स्थित है।

समस्त मंदिर का निर्माण व्यापक मंच पर इस प्रकार से किया गया है कि भक्तों को बाहरी दीवारों पर बनी अद्भुत नक्काशियों का दर्शन हो सके। वह मंच जिस पर मंदिर खड़ा है, दो बैठे शेरों से सजा है।

सोमनाथपुर (कार्टो-१)

त्रिवेन्द्रम

तिरुवनन्तपुरम या त्रिवेन्द्रम केरल राज्य की राजधानी है। यह नगर तिरुवनन्तपुरम जिले का मुख्यालय भी है। भारत की मुख्य भूमि के सुदूर दक्षिण में पश्चिमी तट पर यह स्थित है। यहाँ पर स्थित श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर भारत के सबसे प्रमुख वैष्णव मंदिरों में से एक है। केरल और द्रविडियन वास्तुशिल्प में निर्मित यह मंदिर दक्षिण भारतीय वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस मंदिर का महाकाव्यों और पुराणों में भी उल्लेख किया गया है।

श्रीमद् भागवत् के अनुसार बलराम ने इस मंदिर का दौरा किया, पद्मतीर्थम् में नहाया और कई प्रसाद अर्पित किए। यह मंदिर 108 पवित्र विष्णु मंदिरों में से एक है। मंदिर के गर्भगृह में भगवान विष्णु की विशाल मूर्ति विराजमान है जिसे देखने के लिये दूर-दूर से हजारों भक्त यहाँ आते हैं। इस प्रतिमा में भगवान विष्णु शेषनाग पर शयन मुद्रा में विराजमान हैं।

मान्यता है कि 'तिरुवनन्तपुरम्' नाम भगवान के अनन्त नामक नाग के नाम पर ही रखा गया है। यहाँ पर भगवान विष्णु की विश्रामावस्था को 'पद्मनाभ' कहा जाता है और इस रूप में विराजित भगवान यहाँ पर पद्मनाभ स्वामी के नाम से विख्यात है।

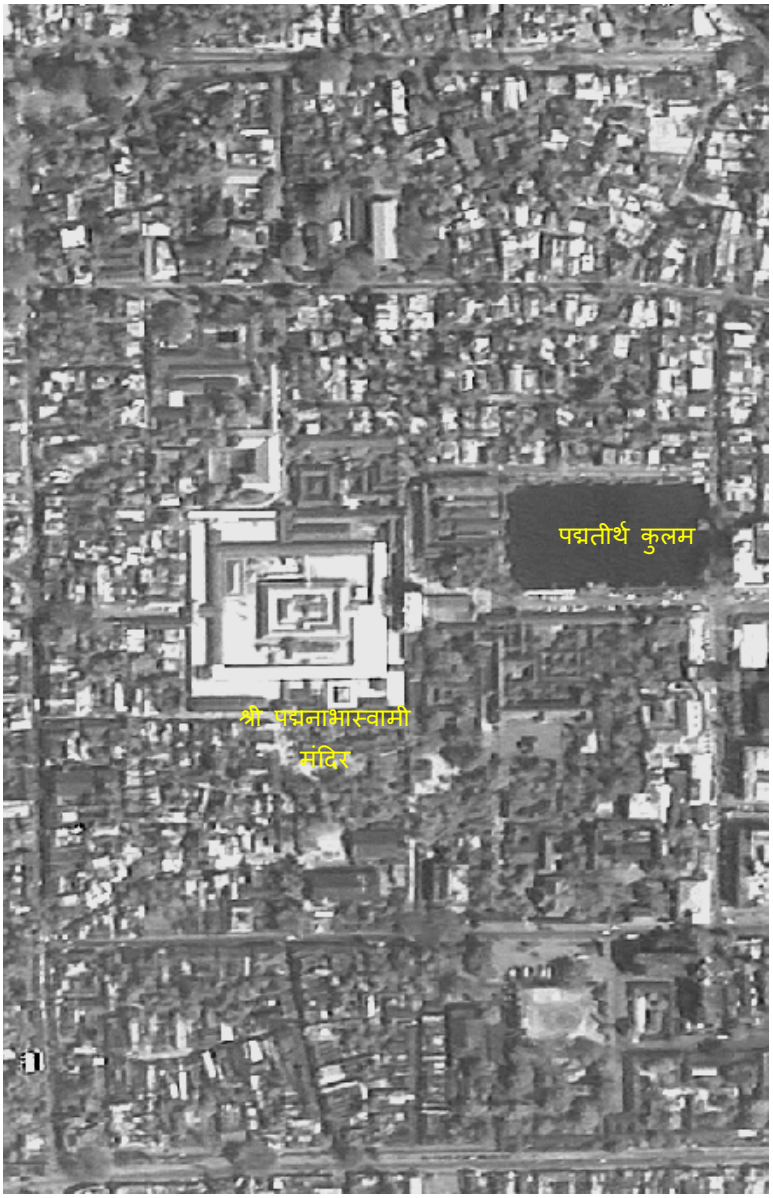

त्रिवेंद्रम (कार्टो-२)

कुंभकोणम

कुंभकोणम तमिलनाडु के तंजौर जिले का छोटा-सा शहर है। यह तंजौर से लगभग 40 किमी और चेन्नई से 263 किमी की दूरी पर स्थित है। कुंभकोणम का संस्कृत नाम कुंभघोणम् है। कहते हैं ब्रह्माजी ने एक घड़ा अमृत से भरकर रखा था। उस कुंभ (घड़ा) की नासिका अर्थात् मुख के समीप छिद्र से अमृत टपक कर बाहर निकल गया और उससे वहाँ के पाँच कोस तक की भूमि भीग गई। इसी से इसका नाम कुंभकोणम पड़ गया। पुराणों में वर्णित कामकोर्णापुरी ही कुंभकोणम है। यह क्षेत्र समस्त संसार में पवित्र भूमि के रूप में मान्य है, जहां एक साथ ब्रह्मा, विष्णु और महेश विराजमान हैं।

कुंभकोणम में दक्षिण भारतीय स्थापत्यकला से युक्त अनेक प्राचीन मंदिर और गोपुरम हैं उनमें श्रीकुंभरेश्वरास्वामी मंदिर सबसे प्राचीन तथा मुख्य पूजास्थल है। ऐसे प्रमाण मिले हैं कि सातवीं सदी के चोल शासकों द्वारा इस मंदिर की प्रतिमाओं की पूजा-अर्चना की जाती थी, इस वजह से इन्हें छठी सदी से पूर्व का माना जाता है। कुंभेश्वर मंदिर की महिमा का उल्लेख अनेक शास्त्रों में है। इसका कलात्मक एवं विशाल गोपुरम करीब 130 फीट ऊंचा है। यहां का दूसरा दर्शनीय मंदिर सांरगपाणि है जो भगवान विष्णु को समर्पित है। मंदिर की अनेक आकर्षक प्रतिमाएं पूरी सजावट के साथ दर्शनीय है। मंदिर का करीब पचास फीट ऊंचा भव्य गोपुरम वास्तुकला का उत्तम उदाहरण है।

इन विशाल मंदिरों तथा गोपुरम के अलावा यहां महामघम सरोवर है। यहां पर नायक राजाओं द्वारा निर्मित रामास्वामी मंदिर भी है जो अपनी अपूर्व शोभा एवं रामायण कालीन चित्रों के लिए प्रसिद्ध है।

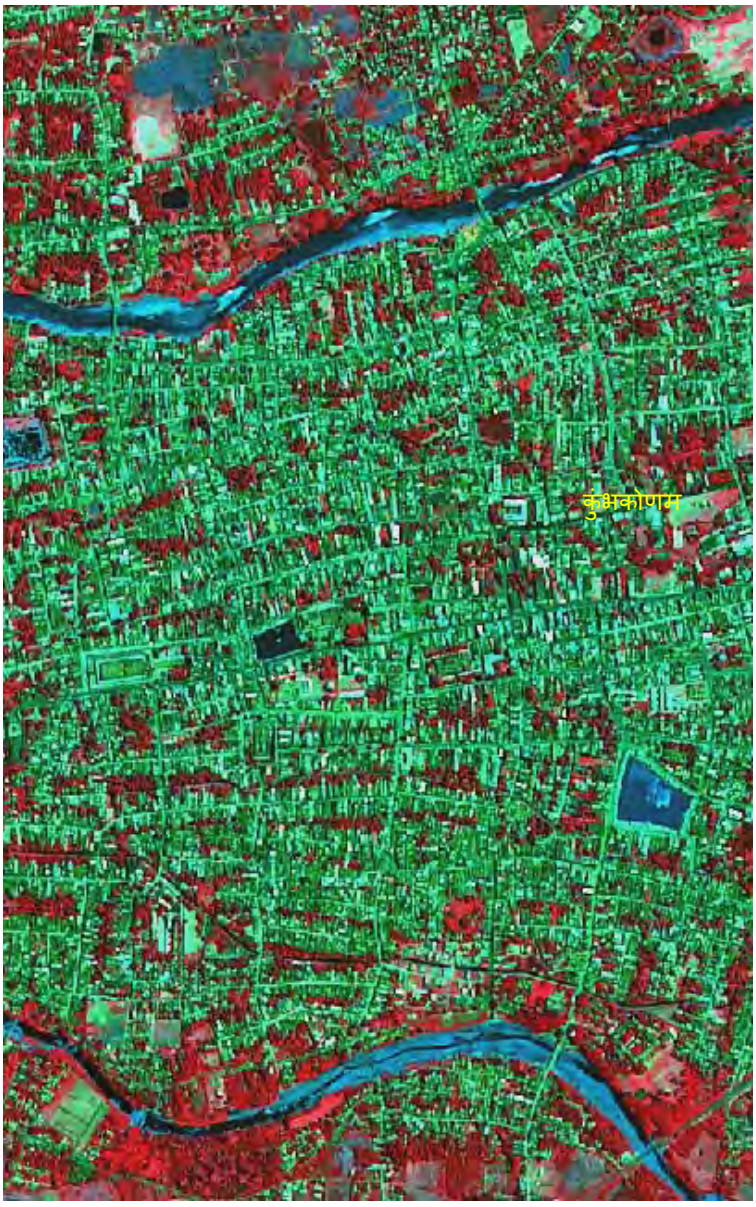

कुंभकोणम (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

जैन धार्मिक स्थल

श्रवणबेलगोला

श्रवण बेलगोला कर्नाटक के हसन जिले में स्थित है। यह एक प्रसिद्ध जैन तीर्थस्थल है। यहाँ एक बड़ा तालाब और दो छोटी पहाड़िया हैं जिन्हें चंदरगिरि और इन्दरगिरि के नाम से जाना जाता है। इंदरगिरि पहाड़ी पर श्रवण बेलगोला बना है, इसमें एक ही पत्थर से तराशी गई 58 फुट ऊँची गोमतेश्वर की मूर्ति है। श्रवण बेलगोला में स्थित गोमतेश्वर बाहुबलि की मूर्ति जैनों के लिए एक अति महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है।

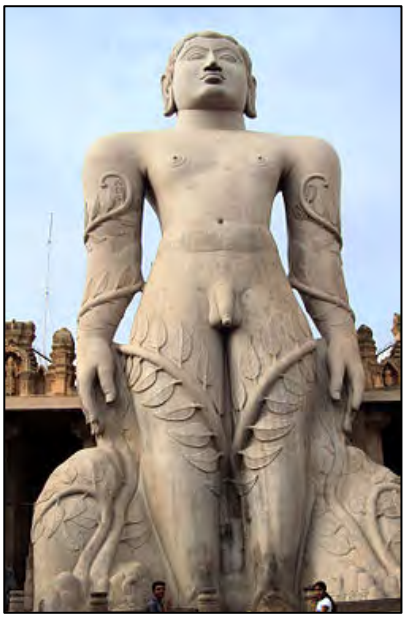

यह मूर्ति अपनी शिल्पकला का अद्भुत व बेजोड़ नमूना है। ऐसी मान्यता है कि चन्द्रगुप्त मौर्य, जो एक जैन भिक्षु बन गये थे, की ईसा पूर्व 298 में यहाँ पर मृत्यु हुई थी। इस मन्दिर तक पहुँचने के लिए 400 से अधिक सीढ़ियाँ चढ़नी होती हैं। गोमतेश्वर मूर्ति के ऊपर फल पत्तियों की बेल तराशी गई है। यहाँ जैन धर्म के 500 से अधिक शिलालेख हैं। प्रतिमा के आधार पर कई नक्काशियाँ हैं जिनमें गंगा राजा तथा उनके जनरल द्दवुंदर्य की प्रशंसा की गई है।

श्रवण बेलगोला (रिसौर्ससेट लिस-४ कार्टो-१ संमिश्रित)

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र
भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन
अहमदाबाद – ३८००१५, भारत
www.sac.gov.in

ISBN: 978-93-82760-03-0